Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

असाधु

खाए पीए सुखे दीहां सूय रहें,
वाले डील में वण रह्या लूंठा।
गोचरी वीहार करें जरें,
जांणें रावला कोतल छूटा।।

जो साधु खा-पीकर दिन में आराम से सोता रहता है और शरीर से भारी भरकम बना हुआ है। गोचरी और विहार के समय ऐसा लगता है मानो रावले के कोतल चल पड़े हैं।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 16 • 20 जनवरी- 26 जनवरी, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-01-2025 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

संयम और तप के द्वारा अनुशासन कर बनें आत्म-अनुशासी : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 11

धर्मसंघ में हो ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में वृद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

अनुशासन, सेवा और साधना की दृष्टि से धर्मसंघ होता रहे वर्धमान : आचार्य श्री महाश्रमण

महाश्रमिक ने वर्धमान महोत्सव के अंतिम दिन पुरुषार्थ की शरण स्वीकार करने की दी प्रेरणा

राजकोट।
09 जनवरी, 2025

राजकोट में आयोजित त्रि-दिवसीय वर्धमान महोत्सव का अंतिम दिन। भिक्षु शासन के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सम्पूर्ण चतुर्विध धर्म संघ को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि वर्धमान होना अभिष्ट है। जब तक व्यक्ति विकास की पराकाष्ठा तक न पहुंचे, तब तक उसे वर्धमान रहना चाहिए। वर्धमान रहने के लिए परिश्रमवान रहना भी अपेक्षित होता है। आलस्य को महारिपु कहा गया है, जो व्यक्ति के शरीर में रहकर उसका महाशत्रु बन जाता है। उद्यम के समान कोई भाई नहीं है। जो पुरूषार्थ-परिश्रम की शरण में रहता है, उसे कभी अवसन्न नहीं होना पड़ता।

भाग्य के प्रति अधिक चिंता करना उचित नहीं है। पुरूषार्थ और परिश्रम का चिन्तन करें। भाग्य ज्ञातव्य हो सकता है, लेकिन हमें अपने कर्तव्यों और पुरूषार्थ में लगे रहना चाहिए। अच्छे पुरूषार्थ का फल अवश्य मिलेगा, चाहे वह आज मिले, कल या परसों।

आचार्यश्री ने कहा कि हमारा धर्म संघ तेरापंथ धर्म संघ है। इसके आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के जीवन से हमें पुरूषार्थ और परिश्रम की शिक्षा मिलती है। सफलता के पौधे को विकसित करने के लिए परिश्रम रूपी जल का सिंचन आवश्यक है। गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के जीवन में परिश्रम और पुरुषार्थ के असाधारण उदाहरण देखने को मिलते हैं। गुरुदेव ने लंबी यात्राएं कीं और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अहिंसा यात्रा के साथ आगम साहित्य के संपादन और बौद्धिक श्रम से भी योगदान दिया। हम सभी में वर्धमानता के लिए पुरूषार्थ की लौ जलती रहनी चाहिए। आगम साहित्य का कार्य चल रहा है, संभवतः वह शीघ्र ही सम्पन्न हो सकेगा। अनेक साधु-साध्वियां उस कार्य से संपृष्ट हैं, निष्ठा से प्रयास करते रहें। आचार्य भिक्षु और श्रीमज्जयाचार्य के साहित्य का अनुवाद भी किया जा रहा है।

आचार्यश्री ने कहा कि सेवा में भी पुरूषार्थ का योगदान है। बौद्धिकता के साथ सेवा करने का अपना महत्व है। गृहस्थ लोग भी यात्रा में भाग लेकर तपस्या और सेवा का योगदान देते हैं। व्यवस्था में श्रम करने वाले लोग वर्धमानता के लिए प्रेरणा देते हैं।

(शेष पेज 10 पर)

अध्यात्म से हो सकती है सर्व दुःख मुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने की बृहत्तर हिसार में त्रि-मासिक प्रवास की घोषणा

मारवाड़ी युनिवर्सिटी, राजकोट।
10 जनवरी, 2025

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में राजकोट में वर्धमान महोत्सव परिसम्पन्न हुआ। राजकोट का त्रि-दिवसीय प्रवास सम्पन्न कर परम पावन 10 किमी का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ मारवाड़ी युनिवर्सिटी के प्रांगण में पधारे।

महान यायावर ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए एक कथानक के माध्यम से फरमाया कि - संसार में कोई किसी का त्राण और शरणदाता नहीं बन सकता है। कोई किसी का नाथ नहीं बन सकता है, फिर भले वह नगर का राजा ही क्यों न हो। जो स्वयं अनाथ है वो दूसरे का नाथ कैसे बन सकता है? किसी को बीमारी, बुढ़ापा या मृत्यु नहीं आएगी ऐसी गारन्टी कोई नहीं ले सकता। क्योंकि आदमी स्वयं इन तीनों से नहीं बच सकता। चाहे व्यक्ति के पास कितना ही धन हो पर बीमारी, बुढ़ापे या मृत्यु से कोई नहीं बचा सकता। कोई सहानुभूति तो दिखा सकता है पर उनसे कोई बचा नहीं सकता। मोक्ष में कोई दुःख नहीं होता। मोक्ष को पाने के लिए साधना करनी पड़ती है। जब आदमी पक्का संकल्प कर लेता है तो पीड़ा से मुक्त हो सकता है। अध्यात्म से सर्व दुःख मुक्ति हो सकती है। हमें मनुष्य जन्म प्राप्त है। जैसे वृक्ष का पका हुआ पत्ता गिर जाता है वैसे ही मनुष्यों का जीवन समाप्त हो जाता है।

(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जनवरी- 26 जनवरी, 2025

भाग्यशाली व्यक्ति ही कर सकता है अध्यात्म ज्ञान का रसास्वादन : आचार्यश्री महाश्रमण

राजकोट।
08 जनवरी, 2025

त्रि-दिवसीय वर्धमान महोत्सव का द्वितीय दिवस। अष्ट मंगलों में एक मंगल होता है - वर्धमानक। अष्टमंगल के प्रदाता, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वर्धमानता को व्यापक रूप से समझाते हुए कहा कि वासुदेव ने जो मंगलभावना व्यक्त की कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, शांति और मुक्ति में वर्धमान रहो, यह मंगलभावना वाला श्लोक हमारे वर्धमान महोत्सव का आधारभूत श्लोक बन सकता है। जैसे प्रेक्षाध्यान में 'संपिखए अप्पगमप्प एणं' को आधारभूत श्लोक माना जाता है, वैसे ही वर्धमान महोत्सव में 'वड्ढमाणो भवाइय' को आधारभूत श्लोकांश माना जा सकता है।

वर्धमानता के लिए ज्ञान एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हर ज्ञान अपने आप में पवित्र है, परंतु कौन-से विषय का ज्ञान किसके लिए उपयोगी हो सकता है, यह विवेक का विषय है। जो अध्यात्म शास्त्र का ज्ञाता है, वह अध्यात्म शास्त्र की बातों को आत्मसात करता है और आचरण में भी लाता है, वही सच्चे रस और आनंद का अनुभव करता है। भौतिक शास्त्र की बातों को आसक्ति के साथ उपयोग में लाने वाला मनुष्य क्लेश और दुःख का अनुभव कर सकता है। जैसे गधा चंदन की लकड़ी का भार ढोता है, परंतु उसका लाभ कोई भाग्यशाली ही उठाता है, वैसे ही अध्यात्म ज्ञान का रसास्वाद भी कोई भाग्यशाली व्यक्ति ही कर सकता है। जिनको अध्यात्म का मार्ग मिला है और वे उस मार्ग पर चलते हैं, वे साधु और व्यक्ति कितने भाग्यवान होते हैं। वर्धमान महोत्सव की आयोजना अनेक वर्षों से हो रही है। वर्तमान में भी यह चल रही है। इस महोत्सव से वर्धमानता की प्रेरणा लेना इसका प्रमुख उद्देश्य है। ज्ञान के क्षेत्र में हमारी वर्धमानता बनी रहे।

व्याकरण का उदाहरण देते हुए कहा गया है कि यह देखने में नीरस लगता है, परंतु यदि अध्ययन और अभ्यास किया जाए तो व्यक्ति व्याकरण में निष्णात बन सकता है और विषयों का ज्ञाता हो सकता है। बिना व्याकरण के व्यक्ति भाषा के क्षेत्र में अंधा है। वह सही-गलत वाक्य का निर्णय नहीं कर सकता।

शब्दकोश का ज्ञान न होने से व्यक्ति बहरा होता है। वह शब्दों का अर्थ नहीं समझ सकता। साहित्य में गति न रखने वाला व्यक्ति पंगु होता है। जिसमें तार्किक बुद्धि नहीं होती, वह मूक के समान होता है। तर्क के बिना वह मौन ही रहता है। ज्ञान के विकास में प्रतिभा का बड़ा योगदान होता है। रायपसेणियम आगम में कुमारश्रमण केशी और राजा प्रदेशी के बीच का संवाद तार्किकता और प्रतिभा का उदाहरण है। प्रश्नों का उत्तर देने की कला विकसित करनी चाहिए। यह बहुश्रुतत्व का प्रतीक है। आदमी की यथार्थ के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। तार्किकता ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त उपलब्धि है। आचार्य श्री भिक्षु, गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साहित्य को देखकर उनके ज्ञान और तर्क की गहराई का अनुभव होता है। अध्यात्म शास्त्रों में डुबकी लगाने से ज्ञान के साथ आचरण और संस्कार भी विकसित होते हैं।

चारित्र समभाव में निहित है। समता भाव से राग-द्वेष की प्रवृत्ति पर अंकुश लगता है। सामायिक चारित्र की जड़ है। पंच महाव्रत अमूल्य हीरे के समान हैं। आठ प्रवचन माताएं भी उसमें सहयोगी बनती हैं। चारित्र की निर्मलता के लिए समितियों और गुप्तियों के प्रति जागरूक रहना आवश्यक है। आचरण का भी अपना महत्व है। अणुव्रत का उद्देश्य है कि व्यक्ति अच्छा इंसान बने। अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता और नशा-मुक्ति से भी अच्छा इंसान बना जा सकता है। गृहस्थ जीवन में छोटे-छोटे नियमों का पालन उनकी आत्मा को निर्मल रख सकता है। प्रेक्षाध्यान से भी चित्त की शुद्धि और राग-द्वेष मुक्त अवस्था प्राप्त हो सकती है।

आचार्य प्रवर ने वर्धमान महोत्सव में उपस्थित गोंडल सम्प्रदाय के धीरज मुनि जी और सुशांत मुनि जी को तेरापंथ धर्म संघ की विशेषताओं और एक आचार्य की परंपरा की जानकारी दी। कार्यक्रम में मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के आचार्यकाल का पंद्रहवां वर्धमान महोत्सव मनाया जा रहा है। इस महोत्सव से हमारे संघीय संस्कार संपुष्ट बने, अच्छे बने। आचार में निपुणता, संस्कार सम्पन्नता और व्यवहार कुशलता ये तीन गुण वृद्धि के आयाम हैं। धर्म संघ में संख्या वृद्धि और हम साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं में भी निरन्तर गुणों की अभिवृद्धि होती रहे। साध्वी वृंद द्वारा समूहगीत की प्रस्तुति दी गई। पूज्यवर की अभिवंदना में कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल वजुभाई वाला, गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजयभाई रूपाणी, सौराष्ट्र तेरापंथ सभा के मंत्री मदन पोरवाल, विनोद बांठिया और स्वामी त्यागवल्लभजी ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्थानकवासी गोंडल सम्प्रदाय के धीरज मुनि जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने परिवार के साथ सौराष्ट्र की राजधानी राजकोट में प्रथम बार पधारे हैं। सौराष्ट्र में स्थानकवासी समाज के सात सम्प्रदाय हैं, जिनमें गोंडल सम्प्रदाय सबसे बड़ा है। स्थानक वासी - तेरापंथी भाई-भाई हैं। जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट दुनिया की प्रथम व एकमात्र जैन युनिवर्सिटी है, यह तेरापंथ समाज की बड़ी उदारता का परिचय है। आचार्यश्री जन-जन का कल्याण कर रहे हैं। पूरे भारत में ये एक ही पंथ ऐसा है जिसमें एक ही आचार्य होते हैं, यह एक विशेष बात है। 264 साल में तेरापंथ वट वृक्ष बन गया है।

हमारा रुझान एवं आकर्षण हो आत्मा की ओर : आचार्यश्री महाश्रमण

टंकारा।
12 जनवरी, 2025

जिनशासन के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी आज अपनी धवल सेना के साथ टंकारा के आर्य विद्यालयम् में पधारे। टंकारा आर्य समाज के संथापक महर्षि दयानंद सरस्वती की जन्मभूमि है। मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जो व्यक्ति एक को प्रमुख मानकर चलता है या आत्मा की ओर अभिमुख रहता है, वही सच्चा प्रमुख है। जो आत्मा की ओर रुचि रखता है, मोक्ष की ओर उन्मुख रहता है, वह जीवन का वास्तविक लक्ष्य समझने वाला होता है।

आदमी को बैठते या सोते समय दिशा का विचार और। विवेक करना चाहिए। बड़ों के प्रति विनय के संदर्भ में आगम में कहा गया है कि बड़ों की ओर मुंह करके बैठना तो अच्छी बात हो सकती है, किन्तु उनकी ओर पृष्ठ भाग करके बैठना विनय और व्यवहार में उचित नहीं है। पूर्व और उत्तर दिशाओं का महत्व है। दीक्षा देने वाले और लेने वाले का मुख भी पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिए। विशेष कार्यों या साधना के दौरान भी इन दोनों दिशाओं की ओर मुख रखना महत्वपूर्ण है।

अध्यात्म के संदर्भ में हमारा दृष्टिकोण आत्मा की ओर होना चाहिए। हमारा रुझान और आकर्षण आत्मा की ओर होना चाहिए। आत्मा चैतन्य तत्व है, जो ज्ञान-दर्शन और उपयोग का स्रोत है। जिसमें चैतन्य है, वही जीव है। साधु वही है, जो आत्मा की ओर उन्मुख रहता है। पदार्थ हमारे साधन हो सकते हैं, लेकिन हमारा साध्य आत्मा है। आत्मा की विशुद्ध अवस्था ही हमारा अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष के मार्ग हैं। इन साधनों का उपयोग करना चाहिए। मोक्ष हमारा साध्य है, और इसके लिए संवर और निर्जरा महत्वपूर्ण साधन हैं। पदार्थों के प्रति आसक्ति और असंयम नहीं होना चाहिए। पदार्थों के प्रति मोह न रखना और संयमित रहना आवश्यक है।

उन्होंने आगे कहा कि साधु अल्पोपधि वाला होना चाहिए। वस्त्रों का उपयोग उचित है, लेकिन आवश्यकता से अधिक नहीं। परंपरा हमारी पहचान बन सकती है, लेकिन उपकरण मोक्ष के मूल साधन नहीं होते। मुख वस्त्रिका हमारी साधना का हिस्सा है और हमारे लिए एक सहज उपकरण बन गया है। रजोहरण, पूंजणी, मुखवस्त्रिका के बिना तो मुक्ति मिल सकती है, लेकिन संवर, निर्जरा, ज्ञान, दर्शन व चारित्र के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। साधुओं का मूल साध्य मोक्ष है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र, तप की आराधना करके मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए। आत्मा की ओर अधिक ध्यान देने और उसमें सहयोगी बनने वाले साधनों को उचित, सुव्यवस्थित रूप में उपयोग करें, यह काम्य है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने बाल मुनियों व साध्वियों से अपने प्रवचन से संदर्भित प्रश्नोत्तर कर उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का क्रम संपादित किया। उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। आर्य विद्यालयम् के संचालक रमणीकभाई ने आचार्यश्री का स्वागत करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

अनुशासन और विनम्रता हैं जीवन के आभूषण

नोखा। व्यक्ति अनुशासन और मर्यादा, संयम, सादगी व विनम्रता का जीवन जीए। जिंदगी में मस्त रहे, अस्त-व्यस्त नहीं। नाहटा परिवार आस्थाशील धार्मिक परिवार है, परिवार में सौहार्द रहे। उपरोक्त उद्गार उग्रविहारी तपोमूर्ति कमल कुमार जी ने नाहटा भवन में 'सघन साधना शिविर' के समापन पर व्यक्त किये। इस अवसर पर भावना मरोठी, सुशील भूरा, हर्षित भूरा, मधु डागा ने मौन की साधना, अनुशासन, संयम में प्रशिक्षण एवं अन्य बिंदुओं पर अपने अनुभव सुनाए। शिव नारायण झंवर ने अपने वक्तव्य में मुनिश्री की श्रमशीलता को नमन किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

दिल्ली। अध्यात्म साधना केंद्र महरौली में तेरापंथ समाज हेतु 5 दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी, समणी सौम्यप्रज्ञाजी का सान्निध्य एवं मुख्य न्यासी के सी जैन का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। समापन समारोह में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया और उपाध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ की उपस्थिति रही। सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष में दिल्ली के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रेक्षाध्यान शिविर लगाने हेतु आश्वस्त किया। सभी शिविरार्थियों ने अपने अनुभव बताते हुए प्रेक्षाध्यान को जीवन विकास का एक प्रभावी और महत्वपूर्ण उपक्रम बताया। शिविरार्थियों के निवास, भोजन की व्यवस्था साधना केंद्र परिसर में रही और विभिन्न सत्रों का संचालन तेरापंथ भवन के महाप्रज्ञ भवन में किया गया। शिविरार्थियों की संख्या 33 रही।

जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण

चलथान। मुनि कोमल कुमार जी आदि ठाणा 2 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा चलथान द्वारा जैन विद्या में उत्तीर्ण होने वाले संभागियों को वर्ष 2022 एवं 2023 के प्रमाण पत्र तेरापंथ भवन, चलथान में वितरित किए गए। प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, तेरापंथ सभा चलथान प्रभारी संपत आंचलिया, तेरापंथ सभा चलथान अध्यक्ष विनोद खाब्या, तेयुप चलथान शाखा प्रभारी अमित गन्ना, जेटीन संपादक पवन फूलफगर, तेयुप चलथान अध्यक्ष दीपक खाब्या, महिला मंडल अध्यक्षा पदमा दक एवं समाज की उपस्थिति रही।

संस्कारशाला कार्यशाला का आयोजन

पालघर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल पालघर द्वारा समृद्ध राष्ट्रीय योजना कार्यशाला के अंतर्गत संस्कार शाला का आयोजन ट्विंकल स्टार विद्यालय में आयोजित किया गया। कार्यशाला का विषय हेल्थी फूड हैबिट्स था। तेमम मंत्री रंजना तलेसरा द्वारा महाप्राण ध्वनि के प्रयोग द्वारा कार्यशाला की शुरुआत की गई। तेमम अध्यक्षा संगीता चपलोत ने स्वागत वक्तव्य के साथ सेहतमंद भोजन के बारे में जानकारी दी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल सदस्य संगीता बाफना ने बच्चों को संकल्प शक्ति के प्रयोग करवाए और जनरल नॉलेज के प्रश्नोत्तर का क्रम संचालित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री रंजना तलेसरा ने किया।

सामाजिक सेवा कार्य

अमराईवाड़ी-ओढव। तेयुप, अमराईवाड़ी द्वारा सेवा कार्य उपक्रम के अंतर्गत बंसीलाल बड़ाला परिवार के सहयोग से गरीबों के लिए कम्बल वितरण की व्यवस्था की गई। तेयुप,अमराईवाड़ी अध्यक्ष मुकेश सिंघवी, मंत्री सुनील चिप्पड़, बंसीलाल बड़ाला, अशोक सिंघवी, नाथूलाल मुणोत ने उपस्थित होकर सेवा कार्य में अपनी सहभागिता निभाई।

किशोर मंडल द्वारा माइक ड्रॉप कार्यक्रम का आयोजन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल - AXIS के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल राजाजीनगर द्वारा 'माइक ड्रॉप' कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। विजय गीत का संगान 'भिक्षु श्रद्धा स्वर' द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने किया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने पधारे हुए सभी प्रतिभागियों एवं श्रावक समाज का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, महिला मंडल अध्यक्षा ऊषा चौधरी ने परिषद् एवं किशोर मंडल को शुभकामनाएँ प्रेषित की। क्षेत्रीय प्रभारी दीक्षित सोलंकी ने किशोर मंडल का उत्साहवर्धन करते हुए उनकी सराहना की और 'माइक ड्रॉप' कार्यक्रम के महत्व पर संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। सभा उपाध्यक्ष शंकरलाल जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम हर महीने आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे समाज में नई प्रतिभाएँ उभरकर सामने आ सकें।

इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें कविता, शायरी, भाषण, बिट बॉक्सिंग आदि शामिल थे। इस मौके पर आर्यन गोलेछा, संजय मांडोत, धीरज देरासरिया, सचिन हिंगड़, और जितेंद्र कोठारी को पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप परामर्शक प्रवीण नाहर, प्रबंध मंडल, सभा परिवार, महिला मंडल परिवार, किशोर मंडल और श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। मंच संचालन तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी और किशोर मंडल से 'माइक ड्रॉप' के संयोजक आर्यन गोलेछा ने किया। कार्यक्रम के अंत में आभार 'माइक ड्रॉप' के सह-संयोजक भुवन कटारिया ने व्यक्त किया।

प्रेक्षाध्यान प्रयोग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

महासभा भवन, कोलकाता।

अंग्रेजी नववर्ष 2025 के प्रथम सप्ताह के अवसर पर जैन कार्यवाहिनी कोलकाता के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान प्रयोग कार्यक्रम का आयोजन महासभा भवन के भिक्षु ग्रन्थागार में हुआ। प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से सुरेंद्र चोरडिया ने मंगलाचरण किया। प्रेक्षाध्यान साधिका मंजू सिपानी ने प्रेक्षाध्यान में श्वास प्रेक्षा के प्रयोग से पूर्व आत्मा, कर्म के आवरण, स्वभाव और विभाव, चैतन्य केंद्र और ध्यान आदि बिंदुओं पर प्रकाश डाला। जैन कार्यवाहिनी के समन्वयक महेंद्र दुधोडिया, सह-संयोजकद्वय रणजीत सेठिया, राजकुमार भदानी ने मंजू सिपानी को साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन जैन कार्यवाहिनी कोलकाता के संयोजक पंकज दुधोडिया ने किया। कार्यक्रम में लगभग 41 कार्यवाहकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

दो सिंघाड़ों का आध्यात्मिक मिलन

चेंबूर, मुंबई। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि कुलदीप कुमार जी और मुनि आलोक कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन तेरापंथ भवन, चेंबूर में हुआ। इस अवसर पर मुनि कुलदीप कुमार जी, मुनि आलोक कुमार जी, मुनि मुकुल कुमार जी, और मुनि हिमकुमार जी—चारों संतों की परस्पर प्रमोद भावना देखकर संपूर्ण श्रावक समाज प्रफुल्लित, आनंदित और गदगद हो गया। दोनों सिंघाड़ों का दस वर्षों के पश्चात यह पुनर्मिलन हुआ। इस शुभ अवसर पर तेरापंथी सभा, तेमम, युवक परिषद, और महासभा के पदाधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

भारतीय प्राचीन कला अवधान का अभूतपूर्व प्रदर्शन

पालघर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमारजी, मुनि आकाश कुमार जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भारतीय प्राचीन कला अवधान का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ।

मुनि विनीत कुमार जी ने अवधान के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि अवधान वह विद्या है जिसमें मस्तिष्क की शक्तियों के जागरण का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा जटिल से जटिल गणनाएं आसानी से की जा सकती है।

सिर्फ गणना करके किसी की जन्म तारीख, वार बताना, करोड़ों और अरबों की गिनती का वर्गमूल बताना इत्यादि सरलता से किये जा सकते हैं। मुनि आकाश कुमार जी ने कहा कि यह बहुत प्राचीन कला है।

आज के भौतिक युग मे यह कला विलुप्त हो रही है। अवधान कर्ता के रूप में मुनि हितेंद्र कुमार जी व मुनि पुनीत कुमार जी ने प्रस्तुति दी। मुनिश्री की अवधान कला की अद्भुत क्षमता देखकर सभी अभिभूत हो गए। मुख्य अतिथि के रूप में शिवसेना महाराष्ट्र प्रवक्ता केदार काले, उनकी पत्नी नगराध्यक्षा डॉ. उज्ज्वला काले, महासभा कार्यकारिणी सदस्य दिलीप राठोड़, किराना रिटेल एसोसिएशन अध्यक्ष सेवाराम चौधरी, होलसेल एसोसिएशन अध्यक्ष भगवानलाल सिंघवी एवं शहर के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। सभा द्वारा मुख्य अतिथियों का सम्मान किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

अवधान वह विद्या है जिसमें मस्तिष्क की शक्तियों के जागरण का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा जटिल से जटिल गणनाएं आसानी से की जा सकती है।

विश्व मैत्री के लक्ष्य के साथ अभातेयुप के तत्वावधान में देश भर में एक साथ, एक समय हुई नव वर्ष के प्रथम रविवार को अभिनव सामायिक साधना

गोरेगांव, मुंबई

अभातेयुप के तत्वावधान में स्थानीय तेयुप अध्यक्ष सुमित चोरड़िया की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन के प्रांगण में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। उपासक रमेश सिंघवी ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। सामायिक में व्यक्ति 48 मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यो का त्याग कर अध्यात्म साधना में लीन हो जाता है। उपासक सिंघवी ने विधिवत अभिनव सामायिक संपन्न करवाई। इस अवसर पर अहिंसा क्रांति से रिपोर्टर राकेश बोहरा, जेटीएन से विकास धाकड़, तेयुप पदाधिकारी, सदस्य एवं श्रावक समाज की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री हितेश राठौड़ ने किया।

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल-उत्सव विश्व मैत्री का स्थानीय तेरापंथ सभा भवन राजाजीनगर में आयोजित किया गया। उपासक भंवरलाल मांडोत ने अभिनव सामायिक के महत्व को बताते हुए जप, ध्यान एवं स्वाध्याय और अंत में त्रिगुप्ति साधना से अभिनव सामायिक का क्रम सम्पादित करवाया। परिषद् शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया ने पधारे हुए सभी श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं सभा परिवार, महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी एवं महिला मंडल परिवार एवं तेयुप परिवार से परामर्शक, प्रबुद्ध विचारक एवं तेयुप सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। मंच संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी द्वारा किया गया।

कोप्पल

तेरापंथ भवन, कोप्पल में अभिनव सामायिक कार्यक्रम में कोप्पल ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, तेयुप, सभा और महिला मंडल सदस्य उपस्थित हुए। उपासिका पुष्पा चौपड़ा एवं कमला पालगोता ने सामायिक का पूरा विश्लेषण बताते हुए अभिनव सामायिक की प्रक्रिया सम्पन्न करवाई।

हासन

साध्वी संयमलता जी ठाणा- 4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् हासन के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने कहा सामूहिक सामायिक से हमारे सामुदानिक कर्मों को नष्ट किया जा सकता है। जैसे हमने यदि किसी फिल्म, मैच या किसी अन्य शो को देखते समय किसी के प्रति हिंसा व घृणा के भाव रखे हैं तो ऐसे कर्म सामूहिक रूप से पुनः अपना शुभ-अशुभ फल देते हैं। यह सामूहिक सामायिक अशुभ कर्मों की निर्जरा का हेतुभूत है। साध्वी मार्दवश्रीजी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाते हुए नवकार मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि रंगों के साथ नवकार का जप करने से प्रशस्त रंगों से हमारे चारों ओर विद्युत तरंगों का वलय बनता है। बायो इलेक्ट्रिसिटी के द्वारा प्रकंपन पैदा होते हैं, वे हमारे संकल्प को सफलता व सिद्धि तक ले जाते हैं। साध्वीश्री ने तन्मयता व लयबद्धता के साथ जप का प्रयोग करवाया। स्वाध्याय योग के क्रम में साध्वी मनीषाप्रभाजी व साध्वी रौनकप्रभा जी ने चौबीसी का संगान किया। इस अवसर पर हासन ज्ञानशाला के होनहार बच्चों को ज्ञानशाला एवं तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा सम्मान व पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रशिक्षिका नम्रता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए।

नोखा

तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में अभिनव सामायिक की साधना का आयोजन मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि ध्यान, जप व स्वाध्याय करते हुए जीवन में सदा समता का विकास होना चाहिए। तनाव मुक्त, शान्त जीवन ही गुलाब की तरह महकता है। मुनिश्री ने सहिष्णुता, धैर्य, अध्यात्म को जीवन में अपनाने पर बल दिया। तेयुप अध्यक्ष निर्मल चौपडा, मंत्री सुरेश बोथरा ने बताया कि मुनिश्री के नोखा विराजने पर युवकों को विशेष प्रेरणा मिली। बुराई त्यागकर अच्छे सिद्धांतों को जीवन में अपनाना सीखा। सभा अध्यक्ष शुभकरण चोरडिया, मंत्री मनोज घीया, कवि इंद्रचंद बैद, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, विनोद मरोठी आदि ने सघन साधना शिविर को लाभकारी बताया।

इंदौर

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी जी के सुशिष्य डॉ. मुनि अभिजीतकुमार जी एवं मुनि जागृतकुमार जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के संगान के पश्चात् अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् इंदौर द्वारा अभिनव सामायिक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. मुनि अभिजीत कुमारजी ने अभिनव सामायिक के महत्व को बताते हुए ध्यान, दीर्घ श्वास आदि के प्रयोग करवाकर विधिवत अभिनव सामायिक करवाई। कार्यक्रम के दूसरे चरण में तेरापंथ समाज, इंदौर एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा मुनिद्वय के इंदौर पदार्पण पर अभिनन्दन कार्यक्रम आजोयित किया गया। मुनि अभिजीत कुमारजी ने अपने संबोधन में कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं मेरी शिक्षा एवं वैराग्य भूमि इंदौर से जुड़ा हूं। आज समाज जन अभिनव सामायिक फेस्टिवल के रूप में सामायिक साधना में संलग्न है। आपने जप के संदर्भ में कहा कि जप अपने आप में आध्यात्मिक औषधि है। जप के द्वारा कर्म बिखरते हैं एवं आत्मा निखरती है। आपने कहा कि स्वयं, परिवार, समाज का उत्थान ही वास्तव में सही उत्थान है। हम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से तेरापंथ समाज का उत्थान, जैन समाज का उत्थान, अजैन लोगों का उत्थान, उक्त तीनों मिशन को लेकर चले हैं। इंदौर अध्यात्म की नगरी हैं। सब एकजुट होकर पूज्य गुरुदेव के सन् 2031 के चतुर्मास के लिए प्रयत्नशील होकर ठोस कार्ययोजना बनाकर गुरु चरणों में उपस्थित होकर चतुर्मास की अर्ज करें। मुनि जागृत कुमार जी ने कहा कि मालवा प्रदेश प्रसिद्ध है। आपने अपने इंदौर से जुड़े संस्मरणों से सबको अवगत करवाया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात मुख्य अतिथि फूलचंद छत्रावत एवं विशेष अतिथि निलेश रांका का सम्मान सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, सभा पूर्व अध्यक्ष प्रकाश कांठेड़ एवं सहमंत्री मनीष दुग्गड द्वारा किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा एवं स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। मुनि अभिजीत कुमार जी के संसार पक्षीय मेहता परिवार की बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी गई। मुनि अभिजीत कुमार जी के संसारपक्षीय भाई एवं तेयुप उपाध्यक्ष तरीन मेहता ने मुनिश्री के साथ व्यतीत जीवन की स्मृतियों के साथ भावविभोर उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। सभा के पूर्व अध्यक्ष गोपीलाल सामोता, मेहता परिवार की ओर से प्रमिला कांसवा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा मंत्री राकेश भंडारी द्वारा डॉ. मुनि अमृतकुमारजी, डॉ. समणी निर्वाणप्रज्ञा जी एवं डॉ. समणी चैतन्यप्रज्ञाजी का संयुक्त स्वागत संदेश का वाचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फूलचंद छत्रावत ने अपने वक्तव्य में महासभा की गतिविधियों एवं प्रकल्पों की जानकारी प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव के सन् 2031 के मालवा प्रवास हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि इंदौर के पास अच्छा मौका है।

हमें पूरी उर्जा के साथ समर्पित होकर इसे साकार करना है। विशेष अतिथि निलेश रांका ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश भंडारी द्वारा किया गया।

अमराईवाड़ी-ओढव

तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी द्वारा उपासिका संगीता सिंघवी की उपस्थिति में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा, युवक परिषद, महिला मंडल के सदस्यों के साथ साथ ज्ञानशाला के बच्चे भी सामायिक में उपस्थित हुए। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजक मनोज चिप्पड एवं जिनेश बाफना ने अभिनव सामायिक के कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी।

तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड ने आभार ज्ञापन किया। राजेन्द्र बाफना ने व्यवस्था में सहयोग दिया। इस अवसर पर लगभग 50 सामायिक हुई।

लिलुआ

तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ ने विश्व मैत्री का उत्सव अभिनव सामायिक का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन लिलुआ में किया। उपासक राकेश राखेचा ने सामायिक का संकल्प करवाया। अभिनव सामायिक के अंतर्गत उपासक राखेचा ने ध्यान का प्रयोग और स्वाध्याय कराते हुए सामायिक की जानकारी दी और सामायिक का महत्व बताया। इस आध्यात्मिक साधना में लिलुआ सभा से अध्यक्ष अनिल जैन और उनकी टीम, महिला मंडल लिलुआ की अध्यक्षा सुशीला देवी छाजेड़ और उनकी टीम, तेयुप लिलुआ के कई कार्यकारिणी सदस्य एवं सकल श्रावक समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अभिनव सामायिक संयोजक मनोज बर्मन, दीपक बागरेचा, अमित हिरावत का सराहनीय श्रम रहा। लिलुआ सभा से सलाहकार प्रदीप लूनिया, महिला मंडल से अध्यक्षा सुशीला देवी छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किये और तेयुप लिलुआ से कार्यकारणी सदस्य राहुल चोपड़ा ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर कुल 53 सामायिक हुई।

सरदारपुरा

तेयुप सरदारपुरा द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन साध्वी प्रमोदश्री जी ठाणा 5 के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों ने सामायिक की आराधना की। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य श्रावकों को आत्मशुद्धि और आत्मनिरीक्षण की दिशा में प्रेरित करना था। मंत्री देवीचंद तातेड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में कुल 25 श्रावक-श्राविकाओं ने अभिनव सामायिक की।

रायपुर

रायपुर स्थित तेरापंथ अमोलक भवन में अभिनव सामायिक का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा उपासिका ज्योति डागा व सरोज कोठारी की उपस्थिति में किया गया। जिसमें विशेष सहयोग अनूप चंद, हेमंत कुमार भटेरा का प्राप्त हुआ। उपासिका ने कहा कि सामायिक समता का भाव जागृत करने का सशक्त माध्यम है। सामायिक धारण किया व्यक्ति साधु जीवन का अनुभव कर सकता है।

विश्व मैत्री के लक्ष्य के साथ अभातेयुप के तत्वावधान में देश भर में एक साथ, एक समय हुई नव वर्ष के प्रथम रविवार को अभिनव सामायिक साधना

मंड्या

अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक का आयोजन मुनि मोहजीतकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् मंड्या द्वारा चन्नपटना के स्थानक भवन में किया गया। सामायिक उत्सव का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के जप से हुआ। इस अवसर पर मुनि मोहजीतकुमार जी ने ध्यान की प्रक्रिया को सम्पादित करते हुए कहा कि सामायिक समता की साधना का एक महत्वपूर्ण प्रयोग है। सामायिक की उपासना करने वाला व्यक्ति अपने मन, वचन और काया के योग को नियंत्रित करता है। इससे व्यक्ति की चंचलता कम होती है तथा स्थिरता का विकास होता है। सामायिक से का समता का जागरण होता है। समता ही धर्म आराधना का आधार है। सामायिक उत्सव की परिसम्पन्नता परमेष्ठी वन्दना के संगान एवं त्रिपदी वन्दना से हुई। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् मंड्या, चिकमगलूर, बेंगलुरु का श्रावक समाज उपस्थित था।

वैदिक विलेज, साल्टलेक

अभातेयुप के तत्त्वावधान एवं मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में स्थानीय आठ तेरापंथ युवक परिषदों ने वैदिक विलेज स्थित तोदी भवन में अभिनव सामायिक फेस्टिवल में भाग लिया। जिनमें पूर्वांचल, दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा, कलकत्ता मेन, दक्षिण कलकत्ता, लिलुआ, उत्तर कलकत्ता, टोलीगंज परीषदों के सदस्यों के अतिरिक्त सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है। सफलता का सूत्र है वर्तमान में जीना, राग-द्वेष से मुक्त होकर जीना, समता के साथ जीना। समता की साधना का उपाय है - सामायिक। सामायिक जैन आचार शास्त्र का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इसे महावीर के दर्शन का सार माना जा सकता है। समता, साम्ययोग अहिंसा, संतुलन, अभय आदि विधायक भावों के अभ्यास का नाम सामायिक है। सामायिक पवित्र जीवन का राज पथ है। सामयिक अध्यात्म का पासपोर्ट व मुक्ति का वीज़ा है। सामायिक से अहिंसा का विकास होता है। इस अवसर पर तेरापंथ सभा साल्टलेक के अध्यक्ष जयसिंह डागा, तेरापंथ युवक परिषद पुर्वांचल के अध्यक्ष नवीन सिंघी, पश्चिम बंगाल अभिनव सामायिक के प्रभारी नमन जम्मड़, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व सहमंत्री अंनत बागरेचा, अभिषेक गोयल, डा. अशोक विनायकिया आदि ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा साल्टलेक के मंत्री अशोक भुतोडिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुणालकुमार जी ने किया। इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा साल्टलेक व संजु दुगड़, विमल दुगड़, डां. अशोक विनायकिया आदि का योगदान रहा।

दादर, मुंबई

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित अभिनव सामायिक का आयोजन स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा किया गया। नूतन वर्ष के प्रथम माह के प्रथम रविवार को आयोजित इस उपक्रम में साध्वी प्रियंवदाजी ने त्रिपदी वंदना एवं जपयोग का प्रयोग करवाया। साध्वी ऋद्धियशाजी ने प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करवाया। स्वाध्याय योग में साध्वी विद्यावतीजी ने नमस्कार महामंत्र का अर्थ एवं विवेचन किया तथा नमस्कार महामंत्र की प्रतिदिन माला फेरने हेतु आह्वान भी किया। साध्वी प्रेरणाश्रीजी एवं साध्वी मृदुयशाजी ने गीत का संगान किया। त्रिगुप्ति साधना एवं परमेष्ठी वंदना के साथ अभिनव सामायिक का प्रयोग संपन्न हुआ। तेरापंथ भवन, दादर के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में कुल 57 सामायिक हुई।

विक्रॉली, मुंबई

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, विक्रोली द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनीष बोहरा ने सभी सदस्यों का स्वागत अभिनन्दन किया। तेममं टीम ने सुन्दर सामायिक गीतिका से मंगलाचरण प्रस्तुति दी। उपसक मालचंद भंसाली व जीतू भाभेरा ने अभिनव सामायिक का महत्व का विवरण दिया। सामायिक में जप, ध्यान स्वाध्याय व त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग किया गया। तेममं अध्यक्ष पुष्पा कोठारी ने आभार ज्ञापन किया। तेयुप अध्यक्ष मनीष बोहरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर कुल 60 सदस्यों ने अभिनव सामायिक की।

अहमदाबाद

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप अहमदाबाद द्वारा तीन स्थानों पर अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। मुनि धर्मरुचिजी एवं मुनि डॉ. मदनकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन शाहीबाग में तेयुप अध्यक्ष पंकज घीया, शाहीबाग सभा अध्यक्ष अर्जुन बाफना एवं अभातेयुप साथी पंकज डांगी की उपस्थिति में सामायिक साधना की गई। मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पश्चिम नवरंगपुरा में तेयुप कोषाध्यक्ष और गुजरात राज्य प्रभारी कुलदीप नवलखा, सह मंत्री 'प्रथम' नैतिक पारख, पश्चिम सभा अध्यक्ष सुरेश दक, अभातेयुप साथी अपूर्व मोदी एवं उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा की उपस्थिति में सामायिक साधना की गई। 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, कांकरिया - मणिनगर में तेयुप उपाध्यक्ष 'प्रथम' प्रदीप बागरेचा, कांकरिया - मणिनगर सभा अध्यक्ष चम्पालाल गाँधी की उपस्थिति में सामायिक साधना की गई। इनके अतिरिक्त सभी स्थाओं पर तेयुप कार्यसमिति सदस्य, स्थानीय सभाओं के पदाधिकारी, तेयुप परामर्शक गण, तेयुप पूर्व अध्यक्ष और बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की सहभागिता रही।

बेंगलुरु

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु (गांधीनगर) द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती तीर्थ, रामनगर, कर्नाटक में हुआ। साध्वी उदितयशा जी ने अपने प्रवचन में सामायिक को जीवन में समता और आत्मशुद्धि का अद्भुत साधन बताया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने त्रिपदी वंदना, ध्यान, कायगुप्ति, स्वाध्याय आदि के प्रयोग करवाए। साध्वी भव्ययशा जी और साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने 'समता की साधना' गीत का संगान किया और उसकी महिमा का वर्णन किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महासभा आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा और परिषद शाखा प्रभारी अमित दक ने अपने विचार साझा करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला और आभातेयुप के इस कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी दी। सामायिक में 41 साधकों ने एक साथ बैठकर ध्यान और साधना की। तेयुप बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल ने स्वागत वक्तव्य एवं मंत्री राकेश चोरड़िया ने आभार ज्ञापन किया।

वर्धमान महोत्सव के उपलक्ष में साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत गीत

लय : ए वतन के नौजवां

वर्धमान वर्धमान तेरापंथ वर्धमान,
ज्ञान दर्श चरण मा अमे बधा प्रवर्धमान ।
लक्ष्य छे साधना, सत्य नी आराधना,
सत्य नी साधना थी, संघ छे प्रवर्धमान ।।

1. आलोकित नभ धरा दिगंत, हे प्रभो यह तेरापंथ,
तेरापंथ की क्या पहचान, एक गुरु और एक विधान।
एक ही आचार है, एक ही विचार है,
एकाचार विचार से, संघ है प्रवर्धमान।।

2. अनुशासन के सिंहासन पर, वत्सलता और अपनापन,
गण नायक का एक इशारा, कर दें अपना सब अर्पण।
आश है, आश्वास है, संघ का विश्वास है,
आश और विश्वास से, संघ है प्रवर्धमान ।।

3. धूप छाँव में सबल सहारा, हम गण के, गण है हमारा,
ज्योतिर्मय इस संघ शरण में, तोड़ें कर्मों की कारा।
अवदान है, संधान है, संघ ही वरदान है,
अवदान और वरदान से, संघ है प्रवर्धमान ।।

4. महाश्रमण युग में, नूतन प्रेरणाएं पा रहे,
हौंसले हैं निराबाध, हम आगे बढ़ते जा रहे।
सिद्धियां मिले यहां, शक्तियां जगे यहां,
सिद्धि और शक्ति से, संघ है प्रवर्धमान ।।

5. राजकोट सौराष्ट्र मा, प्रभु ने पेलू शुभागमन,
जय-2 ज्योतिचरण नी ध्वनि थी, अनुगुंजित छे धरा गगन।
अंतर मा उल्लास छे, खिली रह्यो मधुमास छे,
उल्लास ना मधुमास थी, संघ छे प्रवर्धमान ।।

वर्धमान महोत्सव के उपलक्ष में मुनि वृंद द्वारा प्रस्तुत गीत

लय : आंखें खुली हो या बंद

दुनिया में संघ है यही, जो शानदार लगता है।
वर्धमान है शासन प्यारा, प्राण अपना कहता है।
जय हो जय हो शासनम्, भैक्षव शासनम् ।।

1. क्या कभी सोचा है हमने, कितने आगे हैं हम,
है खुला आकाश देखो, कितने बढ़ते हैं हम,
छिपी हुई लौ जो दिल में है उसको फिर से जलाना।
अर्हताएं निखारकर, करके कुछ दिखाना।
ए नाथ! तेरी दृष्टि से, शासन पवन ज्यों चलता है।।

2. जो भी ले संकल्प ऊँचे, उनको पा के रहें,
चाहे हो संघर्ष जितने, वीर बन के सहें,
बहती हुई उन हवाओं में, अपना पौधा खिलाना।
औरों को देते हैं छांव वो, अपना आशियाना।
ए नाथ! तेरी दृष्टि से, शासन सुमन महकता है।।

3. हम करे सहयोग मन से, जिनके बढ़ते कदम,
संघ ही परिवार मेरा, लक्ष्य अपना परम,
संघफजी हैं हम सभी, सबकी अपनी विशेषता।
मन में खुशियां अथाह है, पाकर के ऐसी एकता
ए नाथ! साथ हैं सभी, शासन सदन निखरता है।।

4. हो कमी अपने में कोई, करते जाएंगे कम,
जी चुराना है नहीं बस, करते जाना है श्रम,
कितनों की स्वेद बूंदों से तेरापंथ खिला है।
क्रांति भिक्षू की बगड़ी में, अद्भुत सिलसिला है।
ए नाथ! गण की नींव में, हीरा खुदा ही दिखता है।।

5. राज क्या महावीर पथ का ? भिक्षो तेरा है पंथ,
शुद्ध संयम पालते ज्यो, वीर विभुवर के संत,
जैसे हो पूनम की चांदनी, इतनी सुंदर कलाएं।
तेरी ये आभा निहारने, थमती है निगाहें।
ए नाथ! तारों में सदा, चांद तेरा चमकता है।

6. है धरा सौराष्ट्र पुलकित, आए पुण्य सम्राट ।
राजकोट में लगा है, चार तार्थ का ठाट।
धन्य हुई युनिवर्सिटी, महाश्रमण है पधारे,
तेरी कृपा से हर जगह, आत्मीय बनते सारे,
ए नाथ! तेरे हाथ में, कुछ जादू जैसा लगता है।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जनवरी- 26 जनवरी, 2025

संबोधि

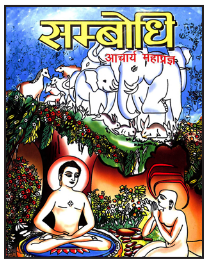

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर

नारी का बन्ध–विमोचन

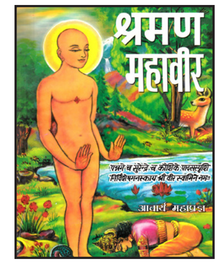

भगवान् प्राह

२८. ये केचित् क्षुद्रका जीवा, ये च सन्ति महालयाः।
तद्वधे सृदशो दोषोऽसदृशो वेति नो वदेत्॥

भगवान् ने कहा–कुछ जीवों का शरीर छोटा है और कुछ का बड़ा। उन्हें मारने में समान पाप होता है या असमान इस प्रकार नहीं कहना चाहिए।

यहां यह बताया गया है कि शरीर के छोटे-बड़े आकार पर हिंसा-जन्य पाप का माप नहीं हो सकता। जो व्यक्ति यह मानते हैं कि छोटे प्राणियों की हिंसा में कम पाप होता है और बड़े प्राणियों की हिंसा में अधिक पाप होता है, भगवान् महावीर की दृष्टि से यह मान्यता सम्यक् नहीं है।

पाप का संबंध जीव– वध से नहीं किन्तु भावना से है। भावों की क्रूरता से जीव–हिंसा के बिना भी पापों का बंधन हो जाता है। मन, वाणी और शरीर की हिंसासक्त चेष्टा से छोटे जीव की हिंसा में भी पाप का बंध प्रबल हो जाता है और परिणामों की मंदता से वहां बड़े जीव की हिंसा में भी पाप का बंध प्रबल नहीं होता। अल्पज्ञ व्यक्तियों के लिए यह कहना कठिन है कि 'पाप कहां अधिक है और कहां कम।' परिणामों की तरतमता ही न्यूनाधिकता का कारण है।

२९. हन्तव्यं मन्यसे यं त्वं, स त्वमेवासि नापरः।
यमाज्ञापयितव्यञ्च, स त्वमेवासि नापरः॥

३०. परितापयितव्यं यं, स त्वमेवासि नापरः।
यञ्च परिग्रहीतव्यं, स त्वमेवासि नापरः॥

३१. अपद्रावयितव्यं यं, स त्वमेवासि नापरः।
अनुसंवेदनं ज्ञात्वा, हन्तव्यं नाभिप्रार्थयेत्।।

जिसे तू मारना चाहता है वह तू ही है कोई दूसरा नहीं है। जिस पर तू अनुशासन करना चाहता है, वह तू ही है, कोई दूसरा नहीं है। जिसे तू संतप्त करना चाहता है, वह तू ही है, कोई दूसरा नहीं। जिसे तू दास-दासी के रूप में अपने अधीन करना चाहता है, वह तू ही है, कोई दूसरा नहीं। जिसे तू पीड़ित करना चाहता है, वह तू ही है, कोई दूसरा नहीं। सब जीवों में संवेदन-कष्टानुभूति होती है, यह जानकर किसी को मारने की इच्छा न करे।

(क्रमशः)

'हमारे गुप्तचरों ने यह सूचना कैसे नहीं दी?' अमात्य ने भृकुटी तानते हुए कहा, 'और मैं सोचता हूं कि महाराज शतानीक को भी इसका पता नहीं है और मेरा खयाल है कि महारानी मृगावती भी इस घटना से परिचित नहीं हैं। मैं अवश्य ही इस घटना के कारण का पता लगाऊंगा।'

प्रतिहारी विजया महारानी के कक्ष में उपस्थित हो गई। महारानी ने उसकी भावभंगिमा देख उसकी उपस्थिति का कारण पूछा। वह बोली, 'देवी! मैं नन्दा के घर पर एक महत्त्वपूर्ण बात सुनकर आई हूं। क्या आप उसे जानना चाहेंगी?'

'उसका किससे सम्बन्ध है?'

'भगवान् महावीर से।'

'तब अवश्य सुनना चाहूंगी।'

विजया ने नन्दा के घर पर जो सुना वह सब कुछ सुना दिया। महारानी का मन पीड़ा से संकुल हो गया। कुछ देर बाद महाराज अन्तःपुर में आए और वे भी महारानी की पीड़ा के संभागी हो गए।

महाराज शतानीक और अमात्य सुगुप्त ने इस विषय पर मन्त्रणा की। उन्होंने उपाध्याय तथ्यवादी को बुलाया। वह बहुत बड़ा धर्मशास्त्री और ज्ञानी था। महाराज ने उसके सामने समस्या प्रस्तुत की। पर वह कोई समाधान नहीं दे सका।

महाराज खिन्न हो गए। उन्होंने उद्धत स्वर में कहा, 'अमात्यवर! मुझे लगता हे कि हमारा गुप्तचर विभाग निकम्मा हो गया है। मैं जानना चाहता हूं, इसका उत्तरदायी कौन है? क्या मेरा अमात्य इतनी बड़ी घटना की जानकारी नहीं दे पाता? क्या मेरा अधिकारी-वर्ग इतना भी नहीं जानता कि महारानी महाश्रमण पार्श्वनाथ की शिष्या हैं? क्या वह नहीं जानता कि भगवान् महावीर महारानी के ज्ञाति हैं? भगवान् हमारी राजधानी में विहार करें और उन्हें श्रमणोचित भोजन न मिले, यह सचमुच हमारे राज्य का दुर्भाग्य है। अमात्यवर ! तुम शीघ्रातिशीघ्र ऐसी व्यवस्था करो जिससे भगवान् भोजन स्वीकार करें।

अमात्य भगवान् के चरणों में उपस्थित हो गया। उसने महाराज, महारानी, अपनी पत्नी और समूचे नगर की हार्दिक भावना भगवान् के सामने प्रस्तुत की और भोजन स्वीकार करने का विनम्र अनुरोध किया। किन्तु भगवान् का मौन-भंग नहीं हुआ। अमात्य निराश हो अपने घर लौट आया।

भगवान् की चर्चा उसी क्रम में चलती रही। प्रतिदिन घरों में जाना और कुछ लिये विना वापस चले आना। लोग हैरान थे। समूचे नगर में इस बात की चर्चा फैल गई। पांचवां महीना पूरा का पूरा उपवास में बीत गया। छठे महीने के पच्चीस दिन चले गए। नगर के लोग भगवान् के भोजन का समाचार सुनने को पल–पल अधीर थे। उनकी उत्सुकता अब अधीरता में बदल गई थी। सब लोग अपना–अपना आत्मालोचन कर रहे थे। महाराज शतानीक ने भी आत्मालोचन किया। कौशाम्बी पर आक्रमण और उसकी लूट का पाप उनकी आखों के सामने आ गया। महाराज ने सोचा हो सकता है, भगवान् मेरे पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हों।

चन्दना को अतीत की स्मृति हो आई। उसे अपना वैभवपूर्ण जीवन स्वप्न-सा लगने लगा। वह चम्पा के प्रासाद की स्मृतियों में खो गई। वे उड़द उसके सामने पड़े रहे।

आज छठे महीने का छब्बीसवां दिन था। भगवान् महावीर माधुकरी के लिए निकले। अनेक लोग उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। भगवान् धनावह के घर में गए। वे रसोई में नहीं रुके। सीधे चन्दना के सामने जा ठहरे। वह दहलीज के बीच बैठी थी। उसे किसी के आने का आभास मिला। वह खड़ी हो गई। उसने सामने देखे बिना ही कल्पना की-पिताजी लुहार को लेकर आ गए हैं। अब मेरे बन्धन टूट जाएंगे।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री हस्तूजी ('छोटा' पींपाड़) दीक्षा क्रमांक 59

साध्वीश्री साधना में दत्तचित्त, प्रकृति से शान्त, सुखदायिनी और बड़ी तपस्विनी हुई। आपने उपवास से लेकर नौ दिन तक क्रम बद्ध तप किया। शीत ऋतु में शीत सहा और ग्रीष्म ऋतु में आतापना ली।

अन्त में संलेखना तप प्रारम्भ किया। जिसका क्रम एक वर्ष तक चला। जिसमें 92 चौविहार बेले, 4 तेले और 25 उपवास किये। पारणे में विगय परिहार। अध्यन्त वैराग्य भावना से दो दिन के अनशन में पण्डित मरण को प्राप्त किया।

– साभारः शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ममत्व-विसर्जनम्
अपरिग्रहः

बेचारा ग्रामीण मजदूर था। लड़के की शादी सामने थी। उसने कहा ठीक है सेठजी! पांच मीटर कपड़ा दे दीजिए। भीतर में हर्ष विभोर और बाहर से नाराजगी दिखाते हुए सेठ ने ग्रामीण द्वारा याचित कपड़ा हाथ में लिया और कुछ कम मापते हुए उसने उसे फाड़ा। (यह सब कुछ स्वप्न में हो रहा है।) ज्योंही वस्त्र के फटने की 'चर-चर' आवाज आइ, व्यापारी की नींद टूट गई, आंखें खुल गई। उसने सोचा- अरे यह आवाज कहां से आई? इधर झांका, उधर झांका आखिर पता चला अपनी ही धोती अपने हाथ में आ गई और उसी को फाड़ डाला।

अपरिग्रह की पुष्टि के लिए आवश्यक है कि साधक शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्श इन इन्द्रिय-विषयों के प्रति होने वाले प्रियता और अप्रियता के भावों से बचे, वैसा प्रयास और भावना का अभ्यास करे। अल्प, बहु, अणु, स्थूल, सचित्त और अचित्त इस छह प्रकार के परिग्रह का तीन कारण, तीन योग से प्रत्याख्यान करने पर ५४ भंग अपरिग्रह महाव्रत के निष्पन्न होते हैं। पांच महाव्रतों के कुल २५२ भंग बनते हैं। पूरा विस्तार जानने के लिए विगत चार निबन्ध द्रष्टव्य हैं।

रात्रिभोजन विरमणव्रत

अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य इस चतुर्विध आहार का रात्रि में भोग करने का तीन करण, तीन योग से प्रत्याख्यान करने पर रात्रिभोजन विरमणव्रत के ३६ भंग निष्पन्न होते हैं।

गुणस्थान : आधार और स्वरूप

आश्रवो भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्ष-कारणम्।
इतीयमार्हती द्रष्टः शेषमस्याः प्रपञ्चनम्।।

आश्रव संसार–भ्रमण का कारण है और संवर मोक्ष का कारण। यही संक्षेप में आर्हत अथवा जैन दर्शन है। बाकी सारा इसी का विस्तार है। आश्रव की क्रमिक अल्पता और संवर को क्रमिक वृद्धि पर टिका हुआ है गुणस्थान का सिद्धान्त। वास्तव में मोक्ष की साधना भी यही है कि संवर को पुष्ट करना और आश्रव को निरुद्ध करना।

गुणस्थान का अर्थ और संख्या

गुण का अर्थ है ज्ञानदर्शनचारित्रात्मा जीव का स्वभाव विशेष। स्थान का अर्थ है वे भूमिकाएं जहां तरतमता से जीव का गुण प्रकट होता है। समवायांग सूत्र में कहा गया है– **कम्मविसोहिमग्गाणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता**–कर्म विशोधि की मार्गणा की अपेक्षा से चौदह जीवस्थान गुणस्थान बतलाए गए हैं। वहां चौदह गुणस्थानों का नामोल्लेख भी प्राप्त है। वह इस प्रकार है-१. मिथ्यादृष्टि २. सास्वादन सम्यग् दृष्टि ३. सम्यग् मिथ्यादृष्टि ४. अविरत सम्यग् दृष्टि ५. विरताविरत ६. प्रमत्त संयत ७. अप्रमत्त संयत ८. निवृत्ति बादर ६. अनिवृत्ति बादर १०. सूक्ष्मसम्पराय ११. उपशान्तमोह १२. क्षीणमोह १३. सयोगी केवली १४. अयोगी केवली।

कर्म-विशोधि की मार्गणा को 'आश्रव के अल्पीकरण' के द्वारा समझा जा सकता है। आश्रव पांच हैं- मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। सबसे न्यूनतम विकास की भूमिका है पहला गुणस्थान। वहां पांचों आश्रव विद्यमान रहते हैं। यद्यपि पहले गुणस्थान में भी बड़ा तारतम्य होता है। पहला गुणस्थान अथवा मिथ्यात्व तीन प्रकार का होता है-

१. अनादि अपर्यवसित– जो सदा था और सदा रहेगा, यह उन जीवों में उपलब्ध होता है जो कभी-भी मोक्ष में नहीं जाएंगे।

२. अनादि सपर्यवसित– जो सदा था पर कभी वह खत्म हो जाने वाला है। यह उन जीवों में उपलब्ध होता है जो मोक्षगामी हैं। पर अभी मिथ्यादृष्टि है।

३. सादि सपर्यवसित– जिस मिथ्यात्व का प्रारम्भ भी होता है और अवसान भी होता है। यह प्रतिपाती सम्यग दृष्टि की अपेक्षा से है। यह उन जीवों में उपलब्ध होता है जो सम्यग दृष्टि को प्राप्त कर पुनः मिथ्यादृष्टि बने हैं। इसलिए उन जीवों के मिथ्यात्व की आदि भी हो गई और वे जीव अवश्य ही पुनः सम्यक्त्वी बनेंगे, इसलिए मिथ्यात्व का अन्त भी होने वाला है। पहले गुणस्थान में पांचों आश्रवों की विद्यमानता रहती है, फिर भी जितना-जितना क्षयोपशम भाव है, यत्किञ्चित् आत्मा की निर्मलता है, आश्रव की अल्पता है, वह जीव का गुण है, उसकी अपेक्षा से मिथ्यादृष्टि को पहला गुणस्थान दिया गया है। दूसरा गुणस्थान वह भूमिका है जिसमें स्थित जीव मिथ्यात्व के बिलकुल निकट पहुंचा हुआ होता है, आस्वादमात्र सम्यक्त्व होता है, वर्तमान में मिथ्यात्व आश्रव नहीं, पर होने ही वाला है। मिथ्यात्व न होने के कारण तथा मिथ्यात्व के अत्यन्त निकट होने के कारण इसको दूसरी भूमिका में रखा गया है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जनवरी 2025
सप्ताह के विशेष दिन

27 जनवरी
भगवान ऋषभ निर्वाण कल्याणक

28 जनवरी
पक्खी

29 जनवरी
भगवान श्रेयांसनाथ केवलज्ञान कल्याणक

31 जनवरी
भगवान अभिनन्दन जन्म, भगवान वासुपूज्य केवलज्ञान कल्याणक

01 फरवरी
भगवान विमलनाथ जन्म, भगवान धर्मनाथ जन्म कल्याणक

02 फरवरी
भगवान विमलनाथ दीक्षा कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मघराजजी युग

मुनिश्री हरदयालजी (कसूण) दीक्षा क्रमांक 270

मुनिश्री बड़े वैरागी थे। सं. 1944 से घृत को छोड़कर शेष 5 विगय का जीवन पर्यंत त्याग कर दिया। साथ ही साथ नियम किया कि वर्षभर में तीन महीने तीन द्रव्यों (रोटी, रंध, पानी) के अतिरिक्त नहीं खाऊंगा।

आपने तप भी बहुत किया। उपवास तो बहुत किये। शेष तप की सूची इस प्रकार है– 2/15, 3/6, 4/1, 5/1, 6/1, 7/ 1, 8/1, 11/1, 13/1

– साभार: शासन समुद्र –

आध्यात्मिक अनुष्ठानों एवं नव संकल्पों के साथ हुआ नव वर्ष 2025 का आगाज

हासन

साध्वी संयमलता जी ने नववर्ष के अवसर पर मंगल पाठ का उच्चारण करते हुए कहा- नववर्ष नए उल्लास एवं उमंग को लेकर आया है। हर इंसान के मन में कुछ नया करने एवं पाने की चाह है। इंसान जीवन के हर पल, हर क्षण को मंगलमय बनाना चाहता है, अतीत को छोड़ अनागत की कल्पना में रंग भरना चाहता है। आने वाले कल की नवीन कल्पनाएं उसके मन व मस्तिष्क को कुछ नया करने हेतु प्रेरित कर रही हैं। इतिहास के झरोखे में जो महापुरुष हुए उन्होंने नव संकल्प, समर्पण, एकनिष्ठा के साथ परिश्रम किया। चाहे महावीर हो या मोहम्मद, कृष्ण हो या कबीर, राम हो या रहीम, महाप्रज्ञ हो या महाश्रमण कड़ी मेहनत एवं लगन से ही लक्ष्य को प्राप्त किया। नव वर्ष पर शुभ संकल्प के साथ शुभ भविष्य का निर्माण करें। साध्वीश्री ने उपस्थित परिषद को डिजिटल डिटॉक्स की प्रेरणा देते हुए रात को ग्यारह बजे से सुबह सात बजे तक मोबाइल परिहार की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने स्वरचित गीत 'नई उमंगें नई तरंगें' का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत में साध्वी मार्दवश्रीजी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत अर्हं के वलय से सुरक्षा कवच का निर्माण करवाया। साध्वी श्री ने कहा- जो समय की नब्ज को पकड़ता है, सफलता उनके चरणों की चाकर बन जाती है। जो समय के साथ चलता है वो कामयाब होता है। अनुष्ठान व मंगल पाठ में मलनाड संभाग एवं आस-पास के क्षेत्रों से श्रावक समाज ने सहभागिता दर्ज की। कार्यक्रम की शुरुआत हासन तेरापंथ युवक परिषद् ने 'आया नया सवेरा' गीतिका के माध्यम से की। मलनाड अध्यक्ष महावीर भंसाली ने सभी का स्वागत किया। हासन सभा अध्यक्ष सोहनलाल तातेड़ ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन नव वर्ष के वृहद मंगल पाठ द्वारा हुआ।

सुजानगढ़

नये वर्ष प्रवेश पर चम्पालाल चोरड़िया के मकान के विशाल हॉल में आयोजित कार्यक्रम में 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा- हमारा जीवन नये और पुराने का संगम स्थल है। नया व्यक्तित्व सामने आने पर भी पुरानी पहचान पूरी तरह मिटती नहीं है। समय बीत जाता है, वह वापस नहीं आता है। अपने पदचिन्ह पीछे छोड़ जाता है, उसकी यादें भर जाती हैं। कैलेंडर ही नहीं और भी अनेक चीजें बदलती है लेकिन मनुष्य नहीं बदलता। नये वर्ष प्रवेश पर हर व्यक्ति संकल्प ले कि मुझे अपने आपको बदलना है। अपने स्वभाव को बदलना है। जो इस कला में निष्णात हो जाता है वह सबका प्रिय और आदरास्पद बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के आगे स्वतः सिर झुक जाता है। मनुष्य दूसरों को तो बदलना चाहता है लेकिन स्वयं को नहीं बदलता है। समय के साथ मनुष्य भी अपने आपको बदल ले तो उसका जीवन स्वस्थ और सुखी बन जाये। मुनिश्री ने नये वर्ष प्रवेश पर प्रासंगिक गीत 'मंगलमय नव वर्ष' गीत का संगान किया। वृहद् मंगलपाठ सुनाकर सबके समाधिमय जीवन जीने की मंगल भावना प्रेषित की।

महरौली

नव वर्ष 2025 की मंगल शुरुआत ऊर्जावान मंत्रोच्चार के द्वारा 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में अध्यात्म साधना केन्द्र, महरौली के महाश्रमण भवन में बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुवता जी ने कहा- आज हम नये वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। नया उल्लास, उमंग और नये संकल्पों के साथ प्रवेश करें। समय का मूल्यांकन करते हुए अपने संजोए हुए सपनों को सार्थक करें। समय एक गतिशील तत्व है, वह ठहरता नहीं है। वह पीछे मुड़कर देखता भी नहीं है। समय नदी के बहते हुए पानी की तरह है, उससे लाभ उठाने वाले बिजली पैदा कर लेते हैं। हम भी भगवान महावीर वाणी को स्मृति में रखते हुए क्षणमात्र भी प्रमाद न करें। जागरूकता के साथ जीवन जीएं। प्रत्येक व्यक्ति को इस नव वर्ष के उपलक्ष में अपने निर्धारित लक्ष्य पर सतत गतिमान रहना चाहिए। लक्ष्य आत्मोन्नति करने वाला हो। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि हमारा यह नया वर्ष उपलब्धि भरा हो, अध्यात्म के दीपक हमारे भीतर में जले, समय का सदुपयोग कर जीवन में नयी-नयी उपलब्धि को प्राप्त करें। जिस भूमि पर बैठकर हम नया वर्ष मना रहे है वह भूमि ऊर्जावान है। इस भूमि पर आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ, आचार्य श्री महाश्रमण जी का चातुर्मास हुआ है, इस क्षेत्र से हम सबको ऊर्जा मिल रही है। साध्वी कार्तिकप्रभाजी जे 'मंगलमय मंगल होगा अपना नववर्ष प्रभात' का संगान किया। कार्यक्रम में दिल्ली के अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। अणुव्रत समिति के पूर्वाध्यक्ष अशोक संचेती, तेरापंथ भवन के व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल, उपासक विमल गुनेचा डॉक्टर सूरजमल सुराणा, नोएडा महिला मण्डल मंत्री कुसुम जैन, दक्षिण दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष प्रदीप खटेड, अणुव्रत समिति सदस्य कल्पना सेठिया, सुमन कोठारी आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभा जी ने की। अन्त में वृहद् मंगलपाठ के द्वारा कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ। संचालन जैन संस्कारक सुशील डागा ने किया।

रायपुर

श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर में समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी व समणी आदर्शप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अंग्रेजी नूतन वर्ष 2025 के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा वृहद मंगलपाठ का आयोजन किया गया। समणी वृंद ने तीर्थंकर स्तुति, गुरु स्तुति, बीज मंत्रों, प्राचीन छंदों, रक्षा कवच एवं मंगल पाठ से श्रावक-श्राविकाओं में ऊर्जा का सम्प्रेषण किया। कार्यक्रम में रायपुर के अलावा छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों राजनांदगांव, दुर्ग, भिलाई, अम्बिकापुर, महेन्द्रगढ़ आदि व पश्चिम उड़िसा से पधारे श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा प्रकाशित कैलेंडर का विमोचन किया गया।

दक्षिण मुंबई

नववर्ष 2025 के शुभागमन पर प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कालबादेवी स्थित महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के आचार्य तुलसी सभागृह में उपस्थित विशाल श्रावक-श्राविकाओं को मंगल पाठ का श्रवण करवाया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा- आज के नव्य प्रभात पर हर व्यक्ति नए संकल्प सजाता है, नया लक्ष्य बनाता है। जिन्दगी में कुछ ऐसे अवसर आते हैं जब व्यक्ति कुछ विशिष्ट करना चाहता है। साध्वीश्री ने कहा- जीवन के साथ अध्यात्म का संगम होना चाहिए, जिससे आनन्द, शक्ति और शान्ति का सतत अनुभव हो सके। मंत्र शक्ति से सुरक्षित व्यक्ति अभय बन जाता है। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने मुबई में प्रवासित समस्त चारित्रात्माओं के प्रति सादर मंगलभावनाएं व्यक्त की। मंगलाचरण के रूप में साध्वीवृन्द ने वीतराग स्तवन की प्रस्तुति दी। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा- नए वर्ष के शुभारम्भ पर हर व्यक्ति अपने समय को सार्थक करने का प्रयास करे। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ,साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित 'उगा स्वर्णिम दिनकर, शुभ संकल्प सजाएं' गीत का संगान किया। महिला मंडल द्वारा विशेष प्रस्तुति दी गई। आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउडेशन मुम्बई के अध्यक्ष कुन्दनमल धाकड़, तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुम्बई अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। तेरापंथ सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का मंच संचालन साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर मुंबई तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्तियों के साथ विविध क्षेत्रों से समागत श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

राजाजीनगर

साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में राजाजीनगर स्थित अशोका कन्वेंशन हॉल में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा अंग्रेजी नव वर्ष 2025 कैलेंडर का विमोचन किया गया। तेयुप द्वारा स्थानीय कन्नड़ भाषा एवं हिन्दी भाषा में कैलेंडर बनाए गए। तेरापंथ महासभा क्षेत्रीय प्रभारी प्रकाश लोढ़ा, सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत, तेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष अरविंद गन्ना, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया एवं प्रबंध मंडल द्वारा कैलेंडर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर तेयुप राजाजीनगर शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी, सभा परिवार, महिला मंडल परिवार, अभातेयुप परिवार, स्थानीय तेयुप के पदाधिकारी, परिषद परिवार एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

राजरहाट

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में नव वर्ष पर आध्यात्मिक उद्बोधन, अनुष्ठान एवं वृहद् मंगल पाठ कार्यक्रम का आयोजन न्यूटाऊन, राजरहाट स्थित महाश्रमण विहार में आचार्य श्री महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साल्टलेक द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता, कोलाघाट, वर्धमान आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। नववर्ष पर सन् 2025 के मंगलमय होने की शुभकामना करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने आध्यात्मिक उद्बोधन में कहा- समय एक प्रवाह है जो निरंतर बहता रहता है। समय चिंतामणि रत्न, कामधेनु व कल्पवृक्ष के समान है। समय एक ऐसी गाडी है जिसे न रोका जा सकता है, न आगे पीछे किया जा सकता है। आज ईस्वी सन् 2025 में दुनिया ने प्रवेश किया है। यह वर्ष इक्कीसवीं शताब्दी की प्रथम पच्चीसी का अंतिम वर्ष है। इसके अंकों का जोड़ 9 होता है जो अक्षय अंक है। यह वर्ष सभी के लिए मंगलमय हो व कल्याणकारी हो। मुनिश्री ने आगे कहा - प्रत्येक व्यक्ति सुख-समृद्धि चाहता है, सुख समृद्धि के लिए मन में शांति, संतुष्टता, पवित्रता, आनंद जैसे तत्वों की आवश्यकता रहती है। हर स्थिति में व्यक्ति को संतुलित रहना चाहिए। असंतुष्ट मन अपराध की ओर ले जाता है। इच्छाओं के विस्तार से लोभ बढ़ता है और लोभ से अहंकार बढ़ता है। इसलिए इच्छाओं का संयम करना चाहिए। धर्म का स्थान कोई भवन नहीं अंतःकरण होता है। संस्कृति सुरक्षित रहे, खान-पान, रहन-सहन सादगी मय एवं शुद्धता से रहे। आयोजनों में अनावश्यक प्रदर्शनों से बचना चाहिए। संस्कारों के विकास हेतु बच्चों को ज्ञानशाला के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने विभिन्न आध्यात्मिक मंत्रोच्चार द्वारा उपस्थित विशाल जनमेदिनी को आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाते हुए वृहद् मंगल पाठ का श्रवण कराया तथा आध्यात्मिक संकल्पों का उच्चारण भी करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण आचार्य महाप्रज्ञ, महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष भीखमचंद पुगलिया ने दिया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के महामंत्री विनोद बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की संगठन मंत्री रमण पटावरी, आमरेफ के प्रधान न्यासी तुलसी दुगड, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साल्टलेक के अध्यक्ष जयसिंह डागा ने नव वर्ष की शुभकामना देते हुए अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन आमरेफ के मंत्री सुरेन्द्र बोरड़ व कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

आध्यात्मिक अनुष्ठानों एवं नव संकल्पों के साथ हुआ नव वर्ष 2025 का आगाज

पक्षीतीर्थ, तमिलनाडु

हर समय उत्साह, आनंद, योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने पर हमारा जीवन उन्नत बन सकता है। नया वर्ष नए संकल्प सजाने का समय होता है। हम हर क्षण को महोत्सव के रूप में मनाएं। उपरोक्त विचार पक्षीतीर्थ - तिरुकुलीकुण्ड्रम में नए वर्ष पर 'हर क्षण मेरा आनंदमय बीते' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए मुनि हिमांशुकुमारजी ने कहें। मुनिश्री ने आगे कहा कि हमारे जीवन को '3 एच'- हेड, हार्ट, हैंड से पवित्र बनाया जा सकता है। हेड में अतीत के भरे हुए कचरे को बाहर निकालें फेंके। हार्ट- हृदय में करुणा, दया, मैत्री, पवित्रता के भावों से सजाकर रखें। अपने हाथों से किसी का भी, कभी भी बुरा नही करें। मुनिश्री ने जीवन को आनंदमय बनाने के लिए प्रायोगिक प्रयोग बताएं। नववर्ष 2025 के लिए आध्यात्मिक, जीवनोपयोगी संकल्पों से सभी संकल्पित कराया। विविध मंगल मंत्रोच्चार से नव वर्ष की प्रभात को मंगलमय बनाया। मुनि हेमन्तकुमारजी ने कहा कि नया साल नई प्रेरणा लेकर आता है। यह उपहार के समान है, इसको हमें उत्साह, आनंद से मनाना चाहिए। जीवन में हर पल, हर प्रसंग में खुश, प्रसन्न रहने के लिए - डाइट फॉलो करने, एक्टिव रहने और खुशी खोजने के उपायों के साथ, कृतज्ञता के भावों में जीने की प्रेरणा दी। पक्षीतीर्थ तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल खटेड़ ने नववर्ष की शुभकामना देते हुए सभी समागत धर्मप्रेमियों का स्वागत अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त किया। चेन्नई से समागत तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने सभा के इस 75वें वर्ष प्रवेश पर, इस वर्ष को आध्यात्मिक गतिविधियों से मनाने की योजना प्रस्तुत की। सभा हीरक जयंती वर्ष के संयोजकगण प्यारेलाल पितलिया, विमल चिप्पड़, उगमराज सांड, मंत्री गजेंद्र खांटेड, सभा पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने मुनिश्री के सान्निध्य में 'हीरक जयंती वर्ष के लोगो' का अनावरण किया। टीपीएफ अध्यक्ष बबीता चोपड़ा ने विचार प्रस्तुत करते हुए नववर्ष कैलेंडर का लोकार्पण किया।

गंगाशहर

मुनि श्रेयांस कुमार जी एवं मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में वृहद मंगलपाठ का कार्यक्रम तेरापंथ भवन, गंगाशहर में समायोजित हुआ। नववर्ष पर आयोज्य कार्यक्रम में मुनि सुमति कुमार जी ने कहा- नया वर्ष नए संकल्पों के साथ, नये लक्ष्यों को प्राप्त करने वाला बने। अतीत का सिंहावलोकन, वर्तमान की महत्ता और शुभ भविष्य की समायोजना करने वाला ही सफल हो सकता है। भविष्य को सुधारने के लिए हमें वर्तमान को सही ढंग से जीने की जरूरत है। मुनिश्री ने विभिन्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए, मंत्रों की विशेषता बताई तथा उन्हें सिद्ध करने की विधि का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा गंगाशहर ने मुनिश्री के गंगाशहर पधारने पर स्वागत समारोह का आयोजन किया। तेरापंथ युवक परिषद् के ऋषभ लालाणी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजु लालाणी, तेरापंथी सभा मंत्री जतन संचेती व तेरापंथ न्यास की ओर से जैन लूणकरण छाजेड़ ने मुनि सुमतिकुमार जी, मुनि देवार्य कुमार जी एवं मुनि आगमकुमार जी का तेरापंथ भवन में पधारने पर स्वागत किया।

मंड्या

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन मंड्या में सन् 2025 के प्रथम दिन का आगाज श्री, धी, धृति, शान्ति, शक्ति, तेजस्विता और विघ्न हरण मंत्रों की आराधना से हुआ। नववर्ष आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम नमस्कार महामंत्र के साथ परमेष्ठी गीत के संगान से प्रवर्धमान किया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने मंत्राराधक विशाल परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि इस शताब्दी के रजत वर्ष के शुभारम्भ पर सन् और कैलेंडर बदलने के साथ जीवन की प्रत्येक क्रिया-कलापों को रजत सम उजली बनाने का प्रयास करें। नव वर्ष पर संकल्प करें कि जीवन की हर प्रकृति संयमित और सात्विक हो। शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास हो। मुनिश्री ने समग्र मानव समाज को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि स्वयं की पहचान बनाने तथा संबंधों को विकसित करने के लिए डिजिटल गजेट्स के अत्यधिक प्रयोग से बचें। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा- मानव को नव्यता पसंद है। हर चीज अपग्रेडेड और नई होनी चाहिए। पर यह नव्यता की चाह सिर्फ बाहरी वस्तुओं के लिये ही ना हो अपितु हम अपने आप में भी नयापन लाएं। नववर्ष के अवसर पर हम ऐसे संकल्प ग्रहण करें जो हमें हमारे नए स्वरूप को डिस्कवर करने और बेहतर भविष्य के निर्माण में योगभूत बने। मंड्या श्रावक समाज के साथ ही बेंगलुरु, चिकमंगलूर, मैसूरु आदि क्षेत्रों से समागत श्रद्धालुओं ने मंगलपाठ श्रवण का लाभ लिया।

डिफू

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में नववर्ष मंगलपाठ एवं मंगलकामना का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- हम केवल नया वर्ष ही नहीं, हर दिन नया मनाएं। हमें प्रतिदिन नया दिन मिलता है। मिलने वाली वस्तु का सदुपयोग या दुरुपयोग करना यह आपका चिंतन होता है। स्वयं का लक्ष्य ऊंचा बनाएं। कलुषित भावनाओं से समस्या पैदा हो जाती है। दूसरों के लिए भी हमारा जीवन मंगलमय बने। हमें अपनी आत्मा का कल्याण करना है, कर्मों से हल्का बनाना है। नये साल पर यह कामना करें मुझे अपने जीवन विकास के साथ दूसरों के विकास में योगभूत बनना है। हमारा हर कदम मंगलमय हो। हम कभी अमंगल सोचें ही नहीं। सकारात्मक चिंतन से सभी का सहयोग अपने आप मिलता है। यह संकल्प करें इस वर्ष मैं किसी का अहित नही करूंगा। मुनिश्री ने आगे कहा कि मनुष्य को शांति सुकून चाहिए, पर यह कहां से मिलेगा? कैसे मिलेगा ? जैसा हम देंगे, हमें वैसा ही मिलने वाला है। अपने आप को योग्य पात्र बनाएं। इस अवसर पर मुनिश्री ने भक्तामर स्तोत्र, लोगस्स पाठ, पैंसठिया छंद, उपसर्गहर स्तोत्र आदि विविध शुभ ध्वनियों के साथ शरण सूत्र के उच्चारण से मंगलपाठ का समापन किया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने एक वर्ष के लिए विभिन्न संकल्प लिए। मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- वर्ष समाप्ति के साथ दिन बदला, कैलेण्डर भी हम बदल देते हैं। कैलेण्डर बदलने के साथ-साथ हम अपनी सोच भी बदलें। सोच बदलने से हमारा व्यवहार एवं आचरण भी बदलता है। जब तक हम स्वयं को नहीं बदलते, तब तक कपड़े, मकान या कैलेण्डर बदलने से भला नहीं होने वाला है। स्वाध्याय, ध्यान एवं आत्मचिंतन के द्वारा अपने जीवन में परिवर्तन लाएं। पूरे वर्ष भर के लिए संकल्प लेकर शुभ भविष्य का निर्माण करें। डिफू जागरुक क्षेत्र है। यहां के समाज का आपसी समन्वय बहुत प्रेरक है। कार्यक्रम का शुभारंभ बच्चों के नवकार मंत्र की प्रस्तुति से हुआ। असम राज्य लोक सेवा अधिकार आयोग के आयुक्त विमल ओसवाल, डिफू उपसभा अध्यक्ष सुरेंद्र भरुंट, गुवाहाटी सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, डिफू, गुवाहाटी, डीमापुर, बरपेटा, जोरहाट, नौगांव आदि के पदाधिकारियों ने नव वर्ष की शुभकामना व्यक्त की। जोरहाट सभा ने मर्यादा महोत्सव के बैनर लोकार्पण एवं अणुव्रत समिति गुवाहाटी ने नववर्ष कैलेण्डर भेंट किया। आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन, गुवाहाटी द्वारा सुपर ज्ञानदीप प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

वाशी

भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन वाशी नवी मुंबई के तत्वावधान में मुनि आलोककुमारजी के सान्निध्य में नव वर्ष के अवसर पर मंगल पाठ का कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र से शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, वाशी - नवी मुंबई द्वारा किया गया। फाउंडेशन के महामंत्री बाबूलाल बाफना ने स्वागत अभिनंदन एवं विशेष सूचनाओं के साथ वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन अध्यक्ष ललित बाफना, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य तनसुख चौरडिया, सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया, अमित आंचलिया अध्यक्ष, तेरापंथ सभा पुणे, आदि की विशेष उपस्थित रही। मुंबई और पुणे के श्रावक समाज ने मंगल पाठ, सेवा और दर्शन का लाभ लिया। आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरविंद खांटेड ने किया।

हनुमानगढ़ जंक्शन

'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभाजी के सान्निध्य में जप एवं वृहद् मंगल पाठ के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि नए साल में हम संकल्प करें कि हम केवल बाहर की यात्रा ही नहीं बल्कि भीतर की यात्रा भी करेंगे। क्योंकि आत्मिक सुख भीतरी यात्रा से ही मिलता है। हमारा व्यवहार कैसा है, हमारी बोली कैसी है, हमारा क्रोध किस स्तर पर है, यह चिंतन का विषय है। साध्वी संकल्पप्रभाजी ने जप अनुष्ठान करवाया। आपने कहा कि जाप के द्वारा अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। साध्वी श्री ने श्रावक समाज को 2027 की गुरुदेव की यात्रा को ऐतिहासिक बनाने हेतु प्रेरित किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में हनुमानगढ़ जंक्शन और टाउन से आंचलिक समिति के अनेक पदाधिकारी एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आंचलिक समिति के अध्यक्ष प्रकाश जैन, सभा अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, मूलचंद बांठिया ने भी अपने वक्तव्य के द्वारा विचार रखे और नववर्ष की शुभकामना प्रेषित की।

पालघर

तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ महिला मंडल पालघर के तत्वावधान में मुनि विनीत कुमार जी, मुनि आकाश कुमार जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि विनीत कुमार जी ने महा मंत्रोच्चार से की। इस अवसर पर मुनि विनीत कुमार जी, मुनि आकाश कुमार जी और मुनि पुनीत कुमार जी ने अपने उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित किया। नववर्ष की पूर्व संध्या पर आयोजित इस भक्ति संध्या को भक्तिमय बनाने हेतु उधना से समागत मयूर और मयंक दुग्गड़ ने अपनी मधुर प्रस्तुति दी। पालघर के स्थानीय गायक गौरव रांका ने भी अपनी प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा पालघर की ओर से गायक कलाकारों का स्वागत और सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हितेंद्र कुमार जी ने किया। इस भव्य आयोजन में सभा अध्यक्ष चतुर तलेसरा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल और कन्या मंडल की पूरी टीम का सहयोग रहा।

भिवानी

साध्वी संगीतश्री जी ने दिल्ली से भिवानी की पदयात्रा के दौरान खरक स्थित संजय गर्ग खरकिया के जय राधास्वामी ऑयल मिल में प्रवास किया। जहां नव वर्ष के प्रातः की मंगल बेला में लगभग एक घंटे तक मंगल मंत्रोच्चारण व मंगलपाठ का श्रवणकर उपस्थित जनता को उज्ज्वल भविष्य व स्वस्थ जीवन की कामना की गई। कार्यक्रम में भिवानी, खरक, रोहतक, बहादुरगढ़, दिल्ली, शाहदरा व नोएडा सभाओं के पदाधिकारी एवं अच्छी संख्या में भाई-बहन उपस्थित थे। सर्वप्रथम साध्वीश्री ने मंगलभावना का विश्लेषण कर सभी के आभामण्डल को पवित्र किया व सुरक्षा चक्र का निर्माण किया। फिर विस्तार से अलौकिक व सिद्धमंत्रों का उच्चारण किया। साध्वी शान्तिप्रभा जी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी मुदिताश्री जी व साध्वी कर्तव्य प्रभा जी ने भी मुक्तक व भाषण के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मण्डल भिवानी ने स्वागत गीत का संगान किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
20 जनवरी- 26 जनवरी, 2025

जीवन विज्ञान ऑनलाइन कार्यशाला सम्पन्न

ऑनलाइन।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा 'संकल्प से सिद्धि' विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी की उपस्थिति में जूम ऐप के माध्यम से हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ, जिसे हनुमानमल शर्मा ने प्रस्तुत किया। कार्यशाला की शुरुआत में जीवन विज्ञान ऑनलाइन प्रभारी सीमू जैन ने सभी का स्वागत करते हुए जानकारी दी कि नव वर्ष 2025 में एक नए सत्र का शुभारंभ किया जा रहा है, जो नियमित रूप से संचालित होगा। कार्यशाला की मुख्य वक्ता, जीवन विज्ञान प्रशिक्षिका जया सिंघी ने संकल्प पूरे न होने के मुख्य कारणों की व्याख्या की। उन्होंने बताया कि हमारे संकल्प केवल चेतन मन तक सीमित रह जाते हैं और अचेतन एवं अवचेतन मन तक नहीं पहुंच पाते। उन्होंने संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने की प्रक्रिया का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इसमें महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग और अनुप्रेक्षा की विधियों के माध्यम से चेतन मन के संकल्पों को अचेतन और अवचेतन मन तक पहुंचाने के प्रायोगिक प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया गया। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए नूतन वर्ष 2025 की शुभकामनाएं दी। उन्होंने आगामी ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में अधिकाधिक भागीदारी का आह्वान भी किया। कार्यक्रम का सफल संचालन जीवन विज्ञान की राष्ट्रीय सह-संयोजक डॉ. हंसा संचेती ने किया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सह-संयोजक कमल बैंगाणी सहित कुल 57 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

पृष्ठ 1 का शेष

अनुशासन, सेवा और...

परिश्रम के लिए शारीरिक हित भी आवश्यक है। तीन प्रकार के हित हैं:

1. **आत्म हित : संयम और तप से आत्मा को उन्नत करना।**
2. **संघ हित :** धर्म संघ के विकास के लिए कार्य करना।
3. **शरीर हित :** शरीर को स्वस्थ और संयमित रखना।

आचार्यश्री ने संघ हित के लिए मुनिश्री कालूजी और मुनिश्री मगनलालजी के योगदान का उल्लेख किया। सेवा में उपेक्षा करना विकृति है, साझ की सेवा करना प्रवृत्ति है और दूसरों की सेवा करना संस्कृति है। सेवा हमारा धर्म है। वर्धमानता के लिए हम में सेवा की भावना बनी रहे। वर्धमान महोत्सव की संपन्नता पर पूज्य प्रवर ने फरमाया कि हमारा धर्म संघ अनुशासन की दृष्टि से, साधना और सेवा की दृष्टि से वर्धमान होता रहे। संघ सेवा के साथ, जैन शासन और मानव जाति की भी सेवा करते रहे। सब जीवों के प्रति हमारी मैत्री रहे। विशिष्ट चारित्रात्माएं भी सेवा का कार्य व विकास के लिए सेवा कराते रहें। बाह्य व्यवस्था में भी कई संत लगे हैं। हमारे सभी कार्य सुरूपेण चलते रहे। बहिर्विहार में भी चारित्रात्माएं, समणियां भी यथावसर, यथायोग्य सेवा कार्य करते रहें। सभी संस्थाएं भी आध्यात्मिक कार्य करती रहें। सभी में वर्धमानता बनी रहे।

पूज्य श्री ने आगे कहा कि हमें रहने के लिए राजकोट में आत्मीय युनिवर्सिटी का स्थान मिला। इनके संतों से भी काफी वार्तालाप हुआ। ये भी खूब आध्यात्मिक-धार्मिक विकास करते हुए अच्छी सेवा करते रहें। त्रि-दिवसीय वर्धमान महोत्सव का समापन दिवस पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि 57 वर्ष पूर्व गुरूदेव श्री तुलसी ने राजकोट में दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया था, पूज्यवर ने वर्धमान महोत्सव का आयोजन करवाया है। तेरापंथ धर्म संघ उत्तरोत्तर वर्धमानता की ओर अग्रसर है। तेज संख्या से नहीं तप की शक्ति से बढ़ता है। वर्धमानता का हेतु है कि वर्तमान आचार्य अपने पूर्ववर्ती आचार्यों को बहुमान देते हैं, उनके कार्य को आगे बढ़ाते हैं। आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादाएं हमारे धर्म संघ हित के लिए स्थापित की, उनका हमारे उत्तरवर्ती आचार्यों ने अनुगमन किया है, कर रहें हैं। तेरापंथ में अनुशासन की एक ऐसी सुवास है जो दूसरे भी ग्रहण करना चाहते हैं। हमारे धर्म संघ में आचार्य स्वयं अनुशासित हैं और दूसरों को भी अनुशासित रखने का प्रयास करते हैं। अनुशासन के दो रूप हैं - विधि और निषेध। अनुशासन में रहने वाला विकास कर सकता है। कार्यक्रम के शुभारम्भ में मुनिवृंद ने गीत का संगान किया। राजकोट की विधायक दर्शना शाह ने श्री चरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्वामी त्यागवल्लभ जी ने अपने गुरु प्रेमरत्न महाराज का संदेश वाचन कर अपनी भावना व्यक्त की। राजकोट ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। राजकोट की मेयर नयनाबेन पढरिया ने आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। सादर उपाश्रय के अध्यक्ष किशोर भाई डोसी, रजनी मालू, कृतिका जैन गोंडल, मीनाक्षी चौपड़ा व योगेन्द्र मालू ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्यात्म से हो सकती है...

डॉक्टर बीमारी का इलाज कर सकता है पर मृत्यु से तो वो भी नहीं बचा सकता। इसलिए भगवान महावीर ने कहा 'गौतम ! क्षण भर भी प्रमाद मत करो।' हम धर्म के रास्ते पर चल अध्यात्म की आराधना करें, ताकि इस संसार से पार भी पा लिया जाए, मोक्ष की प्राप्ति हो जाए। जब तक संसारी अवस्था में है, दुर्गति में भी न जाना पड़े। अच्छा इंसान बने रहने में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति अच्छे सहायक तत्त्व बन सकते हैं। मानव जीवन में धर्म की आराधना करने का प्रयास करें।

आचार्यश्री ने आगे फ़रमाया कि आज मारवाड़ी युनिवर्सिटी में आना हुआ है। कल तक भी हमारा प्रवास आत्मीय युनिवर्सिटी में हुआ। हमारा वर्ष 2024 का चतुर्मास भी सूरत में भगवान महावीर युनिवर्सिटी में हुआ। हमारा एक जैन विश्व भारती डिम्ड टू बी युनिवर्सिटी लाडनूं में है। युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संस्कार आते रहें। पूज्यवर के स्वागत में मारवाड़ी युनिवर्सिटी के चेयरमेन केतनभाई मारवाड़ी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। हिसार की विधायक व जिंदल ग्रुप की चेयरमेन सावित्री जिंदल, महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेशचन्द्र जैन, हरियाणा प्रान्तीय सभाध्यक्ष मक्खन जैन ने अपनी भावना व्यक्त की। हरियाणा के 20 क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने पूज्य सन्निधि में हरियाणा में चतुर्मास फरमाने की पुरजोर अर्ज की। पूज्यवर ने हरियाणा क्षेत्र पर कृपा कराते हुए कहा - 'यथासंभवतया निकट भविष्य में हरियाणा की यात्रा करनी है। उस यात्रा क्रम में बृहत्तर हिसार में तीन महीनों का प्रवास करने का भाव है।' 'शासनश्री' साध्वी यशोधराजी की आत्मकथा 'संकल्प की सीप, संन्यास का मोती' जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा पूज्यवर को समर्पित की गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

विकास पुरूष की गौरव गाथा

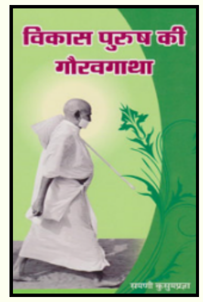

आचार्य तुलसी ने अपनी शक्ति एव संगठन की शक्ति का सही नियोजन एव उपयोग कियाए इसीलिए बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान करने में वे सफल रहें और दूरदर्शिता के साथ विरोधों को पार करके वे संगठन को विकास के सोपानों पर आरोहण कराते रहें। आचार्य तुलसी शक्ति के अजस्र स्रोत थें।

आचार्य तुलसी कहते थे जब तक हमारे संघ में सेवा को प्रमुख स्थान प्राप्त हैए यह धर्मसंघ उत्तरोत्तर विकास की ओर गति करता रहेगा।उसको कभी गर्म हवा नहीं लगेगी और उसकी नींव को कोई हिला नहीं सकेगा।

काका कालेलकर ने एक बार आचार्यश्री को कहा.सब धर्मों का अध्ययन करने के बाद मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाद्वाद जैन धर्म की बहुमूल्य देन है। इसके कारण जैन धर्म में विश्वधर्म बनने की क्षमता है।

आचार्य तुलसी के शब्दों में नया मोड़ का अर्थ है.जीवन दिशा का परिवर्तन। आडम्बर और कुरूढ़ियों के वक्रव्यूह को भेदकर संयम और सादगे की ओर अग्रसर होना एवं विषमता और शोषण के पंजे से समाज को मुक्त करना |

अहिंसा और अपरिग्रह से विकास का मार्ग प्रशस्त करनाए मानवीय समानता के उच्च सिद्धांत को व्यावहारिक रूप में प्रतिष्ठित करना चिंतन की कुण्ठित धारा को गतिशील बनाना।

जिस तेरापंथ को मारवाड़ से बाहर कोई नहीं जानता था उस पंथ की आज देश और विदेश में ऐसी प्रतिष्ठा बनी है कि तेरापंथ यानी जैन और जैन यानी तेरापंथ। विदेशों में और भारत के ऐसे प्रदेशों में जहां नहीं रहते हैए यह समीकरण जैसा मिलता हैं। इस बात का यश किसी को दें तो वह आचार्यश्री तुलसी को मिलती है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

रक्तदान शिविरों के विभिन्न आयोजन

नालासोपारा, मुंबई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद नालासोपारा द्वारा रक्तदान महादान कैंप का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुवात की गई। शिविर में कुल 21 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। तेयुप उपाध्यक्ष उमेश कोठारी, संगठन मंत्री अर्पित ढालावत, कोषाध्यक्ष प्रकाश सोलंकी, सहमंत्री दीपक सोलंकी का सराहनीय श्रम रहा।

दिल्ली। तेयुप दिल्ली द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन KLJ हाउस, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन के. एल. जैन द्वारा किया गया। शिविर में कुल 197 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। परिषद् के युवा साथियों के साथ-साथ अनुभवी साथियों ने कैंप को सफल बनाया। कार्यक्रम में गौरव बच्छावत, ए. के. शर्मा एवं योगेश पटावरी का विशेष श्रम एवं सहयोग रहा।

दिल्ली। तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा जियोनिक्स इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कैम्प में कुल 78 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। शिविर में सौरभ देय का विशेष श्रम एवं सहयोग रहा।

मैत्री और वीतरागता की दिशा में गति कराने वाला है आध्यात्मिक ज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

छत्तर
11 जनवरी, 2025

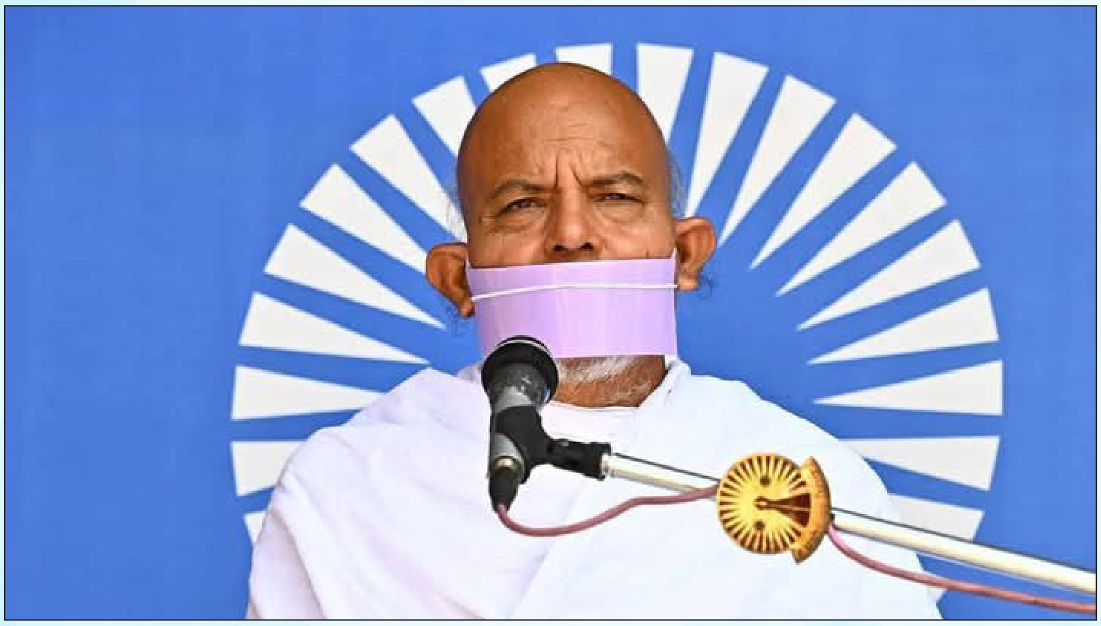

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी तेरह किलोमीटर का विहार कर छत्तर गांव में स्थित प्राथमिकशाला में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि जो आत्मा संसारी अवस्था में है, वह जन्म-मरण के चक्र में बंधी रहती है। संसारी अवस्था में कोई भी जीवन शाश्वत नहीं होता। यह जीवन अनिश्चित, अस्थायी और क्षणभंगुर है। मनुष्य को यह भी पता नहीं होता कि उसका जीवन कब समाप्त हो जाएगा।

मनुष्य को जागरूक रहना चाहिए कि वह जीवन में अच्छे कार्य करे। उत्तराध्ययन आगम में भगवान ने गौतम को यह संदेश दिया है कि समय के एक क्षण को भी प्रमाद में न गवाएं। जैसे कुश के अग्रभाग पर अटकी ओस की बूंद किसी भी क्षण गिरकर समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन भी कभी भी समाप्त हो सकता है। जैसे कपड़ा धीरे-धीरे जीर्ण होता है, वैसे ही उम्र बढ़ने के साथ शरीर भी क्षीण होता जाता है। केश सफेद हो जाते हैं, श्रवण शक्ति कमज़ोर हो जाती है, और अन्य इंद्रियां भी अशक्त हो जाती हैं। इसलिए मनुष्य को सदैव जागरूक रहना चाहिए।

मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ है और यह एक रत्न के समान है क्योंकि इसी देह में आध्यात्मिक साधना की जा सकती है। धर्म की आराधना और उत्कृष्ट साधना केवल मनुष्य जन्म में ही संभव है। यदि जीवन केवल खाने-पीने में व्यर्थ हो गया, तो मानव जीवन का उद्देश्य असफल हो जाएगा। संवर की साधना, संयम की आराधना, तप, स्वाध्याय और ध्यान—इन सब पर ध्यान दें। साथ ही यह भी विचार करें कि आध्यात्मिक ज्ञान कितना अर्जित किया जा रहा है। जिस ज्ञान से आदमी वीतरागता की ओर बढ़ जाए, जिससे चित्त मैत्री से भावित हो जाए, जिससे तत्त्व का बोध हो, वह अध्यात्म विद्या का ज्ञान है। अध्यात्म विद्या के अध्ययन से आनंद और मुक्ति की दिशा में प्रगति संभव है। ज्ञान प्राप्ति के लिए ग्रहण शक्ति, स्मरण शक्ति, समझ, और सहन शक्ति आवश्यक हैं। इसके लिए योग्य गुरु और सहायक सामग्री का होना भी महत्वपूर्ण है। पुरुषार्थ भी उत्कृष्ट होना चाहिए। गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने बचपन में कितना ज्ञान अर्जित किया होगा, उनका उदाहरण हमारे सामने है। हमारे कई साधु-साध्वियां अवधान का प्रयोग करते हैं, जो स्मरण शक्ति की अद्वितीय विशेषता है। मानव जीवन में कठिनाइयां आ सकती हैं, लेकिन हर परिस्थिति में समता भाव बनाए रखें। धन साथ नहीं जाता, लेकिन आध्यात्मिक साधना और धर्म सदा साथ रहते हैं। सामायिक और धर्म की कमाई ही वह पूंजी है जो हमारे साथ जाएगी। तेजस और कार्मण शरीर भी साथ जाते हैं। अध्रुव-अशाश्वत मानव जीवन में धर्म की साधना और ज्ञान प्राप्ति करने आदि का प्रयास हो तो आदमी दुःखों से छुटकारा पा सकता है।

छत्तर प्राथमिक शाला के प्रिंसिपल भावेश भाई संघाणी ने पूज्यवर के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संयम और तप के द्वारा अनुशासन कर बनें आत्म-अनुशासी : आचार्य श्री महाश्रमण

सोखड़ा।
06 जनवरी, 2025

भैक्षव शासन सरताज ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मानुशासन बहुत महत्वपूर्ण तत्व है। अपने आप पर अनुशासन करना चाहिए। दुनिया में दूसरों का अनुशासन भी चलता है। कोई उच्छृंखलता करता है, तो उस पर कठोर अनुशासन किया जाता है, करना पड़ता है।

अनुशासन करना बुरा नहीं है, लेकिन उच्छृंखलता करना अवांछनीय हो जाता है। अनुशासन व्यवस्था हर जगह अपेक्षित होती है। स्वर्ग में देवता रहते हैं, वहां भी अनुशासन होता है। इंद्र की व्यवस्था होती है। कुल 64 इंद्र बताए गए हैं, लेकिन नौ ग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमानों में सभी अहमिन्द्र होते हैं, वहां अनुशासन की अपेक्षा नहीं होती। भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क और बारह वैमानिक देवों में यह व्यवस्था रहती है।

सामान्यतः हर जगह मुखिया की व्यवस्था होती है। किसी के अनुशासन में समुदाय चलता है। यदि अनुशासन न हो, तो अव्यवस्था और अराजकता उत्पन्न हो सकती है। लोकतंत्र में न्यायपालिका होती है। यदि कहीं कोई उच्छृंखलता की बात हो, तो वह दंड दे सकती है। भले ही हमारा देश स्वतंत्र है, लेकिन देश को चलाने के लिए और कर्तव्यनिष्ठा के लिए यह नागरिकों से भी अपेक्षित होता है।

यदि कहीं अनुशासन नहीं है, तो यह लोकतंत्र को मृत्यु और विनाश की ओर ले जा सकता है। लोकतंत्र में जनता पर जनता का शासन चलता है, लेकिन अनुशासन सामान्यतः सर्वत्र अपेक्षित होता है।

शास्त्रकार ने बताया है कि तुम स्वयं पर अनुशासन कर लो। संयम और तप के द्वारा अपना अनुशासन कर स्व-अनुशासी और आत्म-अनुशासी बन जाओ। फिर दूसरों को अनुशासन करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। यदि तुम स्वयं अनुशासन नहीं रखोगे, तो दूसरों का कठोर अनुशासन आ सकता है। अणुव्रत में भी आत्मानुशासन है। अपने आप से अपना अनुशासन रखना ही अणुव्रत की परिभाषा है। हम वाणी, मन, शरीर और इंद्रियों पर संयम रखें। बुरे कार्य न करें, अच्छे कार्य करें। प्रेक्षाध्यान के द्वारा आत्मा से आत्मा को देखा जा सकता है।

आचार्यश्री भिक्षु ने भी अनुशासन का महत्व बताया था। समुदाय अनुशासित हो, तो मुखिया को ज्यादा कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती। अनुशासन करने की भी योग्यता होनी चाहिए। यही सर्वश्रेष्ठ है कि मैं अपनी आत्मा का दमन कर आत्म-अनुशासी बनूं। पूज्यवर के स्वागत में डायमंड पार्टी प्लॉट के मालिक जयंति भाई ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 जनवरी- 26 जनवरी, 2025

धर्मसंघ में हो ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में वृद्धि : आचार्य श्री महाश्रमण

वर्धमान प्रतिनिधि की सन्निधि में राजकोट में हुआ त्रि-दिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारंभ

राजकोट।
07 जनवरी, 2025

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के पावन अवसर पर धर्म संघ को वर्धमानता का सन्देश देने हेतु वर्धमान के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमण जी सोखड़ा से विहार कर आत्मीय युनिवर्सिटी, राजकोट में पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल देशना में फरमाया कि हमारे धर्मसंघ में मर्यादा महोत्सव माघ शुक्ल सप्तमी को मुख्य रूप से आयोजित होता है। इसका प्रारंभ हमारे चतुर्थाचार्य परम पूज्य श्रीमद् जयाचार्य ने किया था। बसंत पंचमी और षष्ठी का दिन भी इसके साथ जुड़ा हुआ है।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के समय में वर्धमान महोत्सव मनाना शुरू हुआ। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने संगरूर में संभवतः विधिवत रूप से इसकी स्थापना की घोषणा की। वर्धमान महोत्सव मर्यादा महोत्सव से कुछ दिन पूर्व आयोजित होता है। मर्यादा महोत्सव विराट महोत्सव है, जबकि वर्धमान महोत्सव लघु महोत्सव है।

पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया - वर्धमान, यानी बढ़ता हुआ। यह वर्धमानता भगवान महावीर के नाम से भी जुड़ी है। लोगस्स में वर्धमान नाम ही भगवान महावीर के लिए आया है। तीर्थंकर के नाम से जुड़ा हुआ यह हमारा महोत्सव है। मर्यादा महोत्सव से पहले साधु-साध्वियों की संख्या कई बार सैकड़ों में बढ़ जाती है। हालांकि यह ज्यादातर राजस्थान में ही संभव हो पाता है। मुमुक्षुओं और साधु-साध्वी संघ की संख्या बढ़नी चाहिए, और इसके लिए यथासंभव प्रयास भी होने चाहिए। संख्या वृद्धि के साथ-साथ गुणवत्ता वृद्धि भी होनी चाहिए। चतुर्विध धर्मसंघ में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप आदि में गुणात्मक वृद्धि हो। हमारे साधु-साध्वियां और समणियां ज्ञान के विकास के लिए सतत प्रयासरत दिख रहे हैं।

महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम इसके लिए एक माध्यम बन सकता है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तत्वज्ञान आदि के पाठ्यक्रम भी ज्ञान वृद्धि के अच्छे माध्यम हैं। जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट और समण संस्कृति संकाय के माध्यम से भी ज्ञान का विकास हो रहा है, अभातेयुप भी इससे जुड़ा है। ज्ञानशाला के माध्यम से छोटे-छोटे बच्चों में संस्कार और ज्ञान का विकास हो रहा है।

दसवेंआलियं व उत्तरज्झयणाणि हमारे लिए अत्यंत उपयोगी हैं। स्वाध्याय से इनका ज्ञान और निर्जरा का लाभ मिल सकता है। यदि इनका कंठस्थीकरण हो तो यह और भी बेहतर हो सकता है। महामना आचार्य भिक्षु की ज्ञान-प्रज्ञा और श्रीमद् जयाचार्य के साहित्य-भंडार को देखकर उनके महान ज्ञान का आभास होता है। सन्मति शिक्षण संस्था के माध्यम से भी ज्ञान का विकास संभव है।

सम्यक ज्ञान का विशेष महत्व है। दर्शन का भी अपना महत्व है। सम्यक्त्व के माध्यम से आयुष्य का बंध वैमानिक देवगति का ही होगा, यह सत्य है। हमें यथार्थ के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए और तत्व को समझने का प्रयास करना चाहिए। कषाय की मंदता भी सम्यक्त्व की निर्मलता में सहायक होती है।

एक दृष्टि से देखें तो माघ शुक्ल त्रयोदशी को हमारा धर्मसंघ वर्धमान हुआ था, जब मुनि हेमराजजी की दीक्षा हुई थी। वह दिन वर्धमानता का दिवस है। गुरुदेव श्री तुलसी ने उनके 200वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में लाडनूं में उन्हें 'शासन स्तंभ' अलंकरण से अभिभूत किया था और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने उसी दिन बीदासर में दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया था।

गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने स्वयं ज्ञान का अध्ययन किया और अनेक लोगों को उनके सान्निध्य में ज्ञान के विकास का अवसर मिला। हमारी दर्शन चेतना निर्मल रहे, जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ में साधना निरंतर चलती रहे, हमारा साधुपन अधिक से अधिक निर्मल हो और उसमें वर्धमानता होती रहे।

तीन शब्द हैं – वर्धमान, हीयमान और अवस्थित। हमें अच्छी बातों में वर्धमान बनना चाहिए, अवगुणों में हीयमान और जहाँ न विकास है, न ह्रास, वह मध्यम स्थिति है। गुणों की दृष्टि से वर्धमान महोत्सव और अवगुणों की दृष्टि से हीयमान महोत्सव है। अवगुणों की कमी और गुणों की वृद्धि हो।

वर्धमान महोत्सव के अवसर पर साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु परम पथ के प्रति समर्पित थे। यह पथ प्रभु महावीर का था। आचार्य भिक्षु इस पथ पर बढ़ते गए और सैकड़ों लोग उनके अनुगमन में चले। शताब्दियों बाद भी तेरापंथ धर्मसंघ की जड़ें गहरी हो रही हैं और यह विकास के शिखरों को छू रहा है।

कार्यक्रम में सौराष्ट्र स्तरीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संजय पोरवाल और जैन समाज की ओर से चंद्रकांत भाई सेठ ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, राजकोट ने स्वागत गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

पूज्यवर के स्वागत में राजकोट के बोहरा मुस्लिम बंधु

वर्धमान महोत्सव कार्यक्रम में गोंडल सम्प्रदाय के धीरज मुनि जी

वर्धमान महोत्सव में स्वामी नारायण संप्रदाय के स्वामी त्याग वल्लभ जी

गोंडल सम्प्रदाय के आचार्य श्री देवेंद्रमुनिजी से आचार्य प्रवर का आध्यात्मिक मिलन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।